Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

अंक 27

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

6 जुलाई 2017 ई   11 शव्वाल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

मुबारक वे जो ख़ुदा के लिए अपनी तामसिक वृत्तियों से जंग कर रहे हैं और हतभागे वे जो अपने नफ़्स के लिए ख़ुदा से जंग कर रहे हैं। और इस में सहयोग नहीं करते।

ख़ुदा की शिक्षा और कुरआन के पथ-प्रदर्शन के विपरीत एक पग भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच सच कहता हूं कि जो मनुष्य कुरआन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

अत: मुबारक वे जो ख़ुदा के लिए अपनी तामसिक वृत्तियों से जंग कर रहे हैं और हतभागे वे जो अपने नफ्स के लिए ख़ुदा से जंग कर रहे हैं। और इस में सहयोग नहीं करते। जो मनुष्य अपने नफ्स के लिए ख़ुदा के आदेशों का उल्लंघन करता है वह आकाश में कदापि प्रवेश नहीं कर सकेगा। अत: तुम प्रयास करो कि कुरआन शरीफ़ का एक छोटा सा हिस्सा भी तुम्हारे विरुद्ध साक्ष्य प्रस्तुत न करे कि तुम उसी पर पकड़े जाओ, क्योंकि थोड़ी सी बुराई भी दण्डनीय है। समय कम है और आयु सीमित। शीघ्र पग उठाओ कि संध्या निकट है। जो कुछ प्रस्तुत करना है उसका भली भांति निरीक्षण कर लो ऐसा न हो कि कुछ रह जाए और व्यर्थ चला जाए या सब अपवित्र और खोटा सामान हो जो ख़ुदा के दरबार में प्रस्तुत करने योग्य न हो ।

..... अत: तुम सावधान रहो। ख़ुदा की शिक्षा और कुरआन के पथ-प्रदर्शन के विपरीत एक पग भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच सच कहता हूं कि जो मनुष्य कुरआन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग कुरआन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अत: तुम कुरआन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया-

''अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलकुरआन''

कि समस्त प्रकार की भलाइयां कुरआन में हैं। यही बात सत्य है । खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत कुरआन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान कुरआन में न हो। क़यामत के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी कुरआन है। आकाश के नीचे कुरआन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। ख़ुदा ने तुम पर अपार कृपा की है जो कुरआन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते। यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि तौरात (बाईबल) को छोड़कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अत: इस उपकार के महत्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया। यह अति उत्तम उपकार है, यह अपार सम्पत्ति है। यदि कुरआन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था। कुरआन वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं ।

..... कुरआन एक सप्ताह में मनुष्य को पवित्र कर सकता है यदि तुम स्वयं उससे दूर न भागो । कुरआन के अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक ने प्रारंभ में ही अपने अध्ययन कर्ताओं को यह प्रार्थना नहीं सिखाई और न ही यह आशा दिलाई कि-

''इहदि नस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम''

अर्थात हमें अपनी उन नैमतों का मार्ग दिखा जो हमसे पूर्व लोगों को दिखाया गया, जो नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालिह थे । अत: अपने साहस को दृढ़ करो और कुरआन के निमंत्रण की अवहेलना मत करो कि वह तुम्हें वे पुरस्कार देना चाहता है जो तुम से पूर्व लोगों को दिए थे । क्या उसने तुम्हें बनी इस्राईल का देश और बैतुल मुक़द्दस प्रदान नहीं किया जो आज तक तुम्हारे अधिकार में है । अत: हे निर्बल आस्था और निर्बल साहस रखने वालो ! क्या तुम्हारा यह विचार है कि तुम्हारे ख़ुदा ने भौतिक रूप में तो बनी इस्राईल की समस्त सम्पत्तियों का उत्तराधिकारी बना दिया परंतु आध्यात्मिक रूप में तुम्हें उत्तराधिकारी न बना सका, जब कि ख़ुदा की इच्छा है कि उनकी अपेक्षा तुम्हें अधिक लाभ पहुंचाए । ख़ुदा ने तुम्हें उनके भौतिक और आध्यात्मिक साधनों और धन सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाया, पर तुम्हारा उत्तराधिकारी कोई अन्य न होगा यहां तक कि प्रलय आ जाए । ख़ुदा तुम्हें अपनी वाणी और वार्तालाप से कभी वंचित नहीं रखेगा । वह तुम्हें वे समस्त नैमतें प्रदान करेगा जो अतीत में तुम्हारे पूर्वजों को प्रदान की गईं ।

..... ख़ुदा तुम्हें अपनी वाणी और वार्तालाप से कभी वंचित नहीं रखेगा । वह तुम्हें वे समस्त नैमतें प्रदान करेगा जो अतीत में तुम्हारे पूर्वजों को प्रदान की गईं । परंतु जो मनुष्य उदण्डता का मार्ग अपनाते हुए ख़ुदा पर झूठ बांधेगा और कहेगा कि ख़ुदा की वाणी मुझ पर आई है हालांकि नहीं आई, या यह कहेगा कि मुझे उसने अपनी वाणी से गौरवान्वित किया है जबकि नहीं किया, तो मैं ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों को साक्षी रखकर कहता हूं कि उसका विनाश किया जाएगा क्योंकि उसने अपने जन्मदाता पर झूठ बांधा और मक्कारी और अहंकार प्रकट किया । अत: तुम इस स्थिति से डरो । लानत है उन लोगों पर जो झूठे स्वप्न बनाते हैं और झूठे तौर पर दावा करते हैं-कि ख़ुदा ने हमें अपनी वाणी और आदेशों से गौरवान्वित किया है । दूसरे शब्दों में उनका विचार है कि ख़ुदा का अस्तित्व नहीं, पर ख़ुदा का प्रकोप उन पर आएगा । उनका बुरा दिन उनसे टल नहीं सकता । अत: तुम सत्य, शालीनता और संयम से क्षमायाचना करो, ख़ुदा के प्रेम में उन्नति करो और जीवन पर्यन्त अपना कर्तव्य यही समझो, फिर ख़ुदा तुम में से जिसको चाहेगा अपनी वाणी और वार्तालाप से गौरवान्वित करेगा । तुम्हारी ऐसी आकांक्षा भी नहीं होनी चाहिए कि परिणाम स्वरूप तामसिक आवेग जन्म लेने लगें जिससे अनेकों लोग नष्ट हो जाते हैं । अत: तुम सेवा और उपासना में लगे रहो । तुम्हारे समस्त प्रयास ख़ुदा के आदेशों का पालन करने में व्यस्त रहें । मुक्ति की प्राप्ति हेतु विश्वास और श्रृद्धा में उन्नति करो न कि ख़ुदा की वाणी के प्रदर्शन हेतु ।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 25 -28)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ज़िक्रे इलाही

तकरीर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो

जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई (भाग-2)

पिछले साल इस विषय का वर्णन न कर सकने में हिक्मत:

पिछले साल इसी विषय पर वर्णन करने का मेरा इरादा था लेकिन एक दूसरा विषय जो शुरू किया कि वह भी आवश्यक था तो यह रह गया। इसमें ख़ुदा तआला की हिक्मत ही थी और वह यह कि अब जो उसके संबंधित नोट लिखने लगा। तो पिछले साल के नोट इस मुकाबला में ऐसे मालूम होने लगे। जैसे उस्ताद के मुकाबला में शिष्य के लिखे होते हैं। क्योंकि पहले की तुलना में अब बहुत ज्यादा बातें मुझे समझाई गई हैं। अत: आज इस विषय में जो ज़िक्रे इलाही से संबंधित है। आप लोगों को कुछ सुनाना चाहता हूं और इसमें इस अवसर पर इसलिए सुनाना चाहता हूँ कि अक्सर लोग अखबारें तो पढ़ते हैं। दुआओं से संबंधित जो तरीके मैंने बताए थे। छप कर प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन आप लोगों में से कई ऐसे भी होंगे। जिन्हें आज मालूम हुआ होगा कि दुआ के बारे में भी मैंने कुछ बताया था। तो ज़िक्रे इलाही से संबंधित बयान करने के लिए यह अवसर इसलिए मैंने चुना है कि इस मौके पर बयान करने से कई हज़ार व्यक्ति सुन लेगा। और उन के द्वारा बात आगे निकल जाएगी।

ज़िक्रे इलाही के विषय का वितरण:

इस विषय में जो बातें में वर्णन करना चाहता हूँ वह यह है (1) ज़िक्रे इलाही या ज़िक्ररुल्लाह से क्या मतलब है? ज़िक्रे इलाही की ज़रूरत क्या है? ज़िक्रे इलाही में क्या सावधानियां बरतनी आवश्यक हैं? ज़िक्रे इलाही के समझने में लोगों ने क्या ग़लतियाँ खाई हैं? जो लोग कहते हैं कि नमाज़ पढ़ते समय हमारा ध्यान स्थापित नहीं रहती और शैतान शंकाए डाल देता है उनके लिए शैतान को भगाने और ध्यान बनाए रखने के क्या उपाय और क्या साधन हैं?

यह वह भाग है इस विषय के जिन पर आज मैं अगर ख़ुदा तआला तौफ़ीक़ दे तो कुछ बयान करूँगा। इन बातों को सुनकर आप लोगों ने समझ लिया होगा कि यह इस प्रकार का विषय नहीं है। जो किसी विशेष प्रकार के लोगों से संबंध रखता है। बल्कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या ग़रीब, छोटा हो या बड़ा, प्रत्येक से सम्बन्धित है। अत: आप लोग इसे अनुभव में लाएंगे तो साबित हो जाएगा कि वह मामूली न थी। बल्कि बहुत महान परिणाम पैदा करने वाली थी।

ज़िक्रे इलाही किसे कहते हैं:

ज़िक्र के अर्थ हैं याद करने के। ज़िक्ररुल्लाह के यह अर्थ हुए कि ख़ुदा तआला को याद करना। अत: अल्लाह तआला को याद करने के तरीके का ज़िक्ररुल्लाह कहते हैं। अर्थात अल्लाह तआला की विशेषताओं को सामने रखना और उन्हें ज़बान से बार बार करना और उन को दिल से स्वीकार करना और उसकी शक्तियों और कुदरतों का निरीक्षण करना ज़िक्ररुल्लाह है।

विषय का महत्त्व:

यह विषय कितना महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। इसके बारे में थोड़े शब्दों में यह कहूंगा कि बड़ा ही प्रमुख है। शायद कोई विचार करे कि चूंकि इस पर मैंने व्याख्यान देना शुरू किया है इसलिए उसे बड़ा महत्त्वपूर्ण कहता हों। लेकिन मैं इसलिए नहीं कहता। बल्कि इसलिए कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने उसे बड़ा कहा है। अत: कुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फरमाता है

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (अन्कबूत: 46) कि अल्लाह तआला का ज़िक्र सभी मामलों बड़ा और सभी इबादतों से बढ़कर है। अत:जब अल्लाह तआला ने कहा है कि ज़िक्र सबसे बड़ा है। तो यह मेरा कथन नहीं बल्कि ख़ुदा तआला का है कि यह विषय सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण है।

अब सवाल है कि अगर यह विषय सबसे बड़ा और प्रमुख है तो इस की तरफ सबसे अधिक ध्यान करने का आदेश भी चाहिए। इसके लिए जब हम कुरआन को देखते हीं। तो मालूम होता है कि बड़ा अधिक इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि लोग अल्लाह तआला का ज़िक्र की तरफ ध्यान दें। इसलिए अल्लाह तआला कहता है।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا

(अद्दहर: 46) हे मेरे बन्दे ! अपने रब्ब को सुबह और शाम याद कर। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जिस मज्लिस में अल्लाह तआला का ज़िक्र हो रहा हो। उसे चारों ओर से फिरिश्ते घेर लेते और ख़ुदा की रहमत नाज़िल करते हैं। मैंने यह विषय इसलिए भी जलसा सालाना में वर्णन करने के लिए रखा कि जब कई हज़ार लोग दूर दराज़ से जमा होंगे तो उन के से सामने बयान करूँगा ताकि कि सब फरिश्तों की रहमत और बरकत नाज़िल करें। फिर वे लोग जब अपने घरों को जाएंगे तो यह बातें अपने साथ ले जाएंगे। और जू लोग यहाँ नहीं आए उन्हें सुना देंगे और ऐसी सारी जमाअत में बरकत फैल जाएगी। अत: मैंने इस उद्देश्य के लिए भी आज का दिन इस विषय के बयान करने के लिए चुना। मैंने अभी बताया है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जिस जलसा में ख़ुदा तआला का ज़िक्र हो रहा हो उस के आसपास फरिश्ते इकट्ठे हो जाते हैं और अल्लाह तआला की दया और बरकत लाकर बैठने वालों नाज़िल करते हैं। अत: जब ज़िक्रे इलाही एक ऐसी उच्च बात है कि सुनने के लिए फरिश्ते भी इकट्ठे हो जाते हैं और सुनने वालों पर रहमत नाज़िल करते हैं। तो समझ लेना चाहिए कि यह कैसी महत्त्वपूर्ण बात है। और फिर जो फरिश्तों का उस्ताद हो उसे वह कितना मान करेंगे। क्योंकि जो ज़िक्र होगा उसके पास फरिश्ते हाज़िर होंगे और जितना भी अधिक होगा उतने ही अधिक फरिश्ते आएंगे और उसे नेक कामों की तहरीक करेंगे। फरिश्तों का आना कोई काल्पनिक बात नहीं बल्कि यह सुनिश्चित है। मैंने ख़ुद फरिश्ता देखा है और एक बार तो बहुत बेतकल्लुफ़ी से बातें भी की हैं। तो ज़िक्र करने वाले के पास फरिश्ते आते हैं। और उसके साथ उनकी दोस्ती और संबंध हो जाता है। फिर ख़ुदा तआला कहता है يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ (अल मुनाफकून: 10) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا (अहज़ाब: 41-42)हे ईमान लानेवालो! तुम को माल और औलाद अल्लाह तआला के ज़िक्र से न रोक दे। तुम अल्लाह तआला को याद करने में किसी बाधा की परवाह न करो और कोई काम तुम्हारा ऐसा न हो जो करते हुए अल्लाह तआला के ज़िक्र को छोड़ दो। अल्लाह तआला का ज़िक्र अत्यधिक करो और कोई काम तुम्हारा ऐसा न हो जिसे करते हुए अल्लाह तआला का ज़िक्र छोड़ दो। अल्लाह तआला का ज़िक्र अत्यधिक करो और सुबह और शाम उसकी महिमा का वर्णन करो। इसी तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं और अबू मूसा अशअरी की रिवायत है مَثَلُ الَّذِىْ يَذْكُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِىْ لَا يَذْكُرُهٗ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ لَا يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ (बुखारी किताबुल दावात) कि उस व्यक्ति का उदाहरण जो अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है और जो नहीं करता ऐसी ही है जैसे जीवित और मुरदा का है। अर्थात वह जो अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है वह जीवित है और जो नहीं करता वह मर चुका है।

इससे मालूम हो सकता है कि ज़िक्ररुल्लाह कितना महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। फिर तिर्मिज़ी में रिवायत है अूब दरादाअ कहते हैं कि أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيكِكُمْ، وَأَرْفَعِهَا فِي دَرَجَاتِكُمْ وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوا أَعْنَاقَكُمْ، ذِكْرُ اللّٰهِ (तिर्मिज़ी) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को संबोधित करके फरमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी बात न बताऊं जो सबसे बेहतर और सब से पसंदीदा हो और सोने तथा चांदी के खर्च से भी बेहतर हो और इससे बेहतर हो कि कोई जिहाद के लिए जाए दुश्मनों को कत्ल करे और ख़ुद भी शहीद हो। सहाबा ने कहा फरमाइए आपने फरमाया वह अल्लाह तआला का ज़िक्र है। एक दूसरी हदीस में आया है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ज़िक्रे इलाही का स्थान बहुत उंचा है। सहाबा ने कहा हे रसूलल्लाह क्या जिहाद से भी उसका स्थान उंचा है। आपने फरमाया। हाँ इससे भी बढ़कर वजह यह कि ज़िक्रे इलाही जिहाद की प्रेरणा देता है।

ज़िक्रे इलाही की तरफ ध्यान की कमी का कारण:

यह है कि ज़िक्रे इलाही का महत्त्व और जरूरत। लेकिन ज़िक्रे इलाही कुछ हिस्से ऐसे हैं कि जिनके की तरफ हमारी जमाअत का ध्यान नहीं और यदि है तो बहुत

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मुसलमान उलेमा के ग़लत विचारों, पवत्रि क़ुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा और उपदेशों की गहराई को न समझने और केवल सतही व्याख्याएं और तफसीरें करने के कारण मुसलमानों का बहुमत इस बात को समझता ही नहीं कि ख़िलाफत की प्रणाली कैसे स्थापित होगी और मुसलमानों में एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो यह कहता है कि किसी ख़िलाफत की ज़रूरत नहीं है और जो जो, जिस जिस फिर्के से संबंध रखता है उस पर अनुकरण करे और यही पर्याप्त है। ये बातें स्पष्ट करती हैं कि उनके पास व्यक्तगित और फिर्के, मुस्लिम उम्मत के व्यापक हित और एक हाथ में जमा होने की तुलना में अधिक महत्त्व रखते हैं।

कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी सांसारिक सरकारों के बलबूते पर अपनी ख़िलाफत स्थापित करना चाहते हैं उनके विचार में ख़िलाफत किसी शक्ति की वजह से स्थापित हो जाएगी और ऐसे ये लोग अल्लाह तआला के इस स्पष्ट संदेश को नहीं समझते कि ईमान और नेक कर्मों के साथ यह वादा शर्त वाला है। अल्लाह तआला वास्तविक आबिद बनने वालों के साथ यह वादा शर्त के साथ है। आम मुसलमानों के इस गलत धारणा के कारण इस्लाम विरोधी ताकतों ने भी इस्लामी दुनिया को कमज़ोर करने के लिए ऐसे संगठनों को स्थापित करने में भूमिका निभाई और सहायता देनी शुरू की जिन्होंने ख़िलाफत के नाम पर अपने आप को संगठित किया लेकिन यह कुछ समय तक सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सांसारिक मालिकों की मदद न मिलने की वजह से या उनके उद्देश्यों पूरे होने की वजह से ख़त्म हो रही हैं।

पिछले दिनों यहां यू.के में मैनचेस्टर में घटना हुई और बेवजह बाईस तेईस लोगों की हत्या कर दी गई जिसमें मासूम बच्चे भी शामिल थे। यह बहुत क्रूर काम है और किसी भी मामले में यह इस्लाम की शिक्षा नहीं ठहराया जा सकता। ऐसे क्रूर घटनाओं को देख हम बेचैन होते हैं। अल्लाह तआला उन मरने वालों पर भी दया करे और उनके परिजनों को भी धैर्य प्रदान करे और उन ज़ालिमों के हाथों को भी रोके जो इस्लाम के नाम पर और ख़िलाफत के नाम पर ऐसी हरकतें कर रहे हैं।

ख़िलाफत न सांसारिक शक्ति से मिल सकती है न सांसारिक चालाकियों से न तथाकथित विद्वानों के इकट्ठे होकर करार दादें पास करने से जैसा कि कुछ साल पहले यह कोशिश भी हो चुकी है कि मुसलमान इकट्ठे हों और अपना कोई ख़लीफा चुन लें, इस तरह नहीं होगी ।

ख़िलाफत की प्रणाली जो डर को शांति में बदलने वाला सिस्टम है जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करते हुए, धर्म को दृढ़ता देने का माध्यम बनने वाला है। उसका संबंध इस माध्यम से स्थापित होने वाली ख़िलाफत है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के बताए हुए तरीके के अनुसार प्रकट होना है जिस के बारे में अल्लाह तआला ने कुरआन में सूरत जुम्अः में कि وَّ اٰخَرِيۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا يَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ और उन्हीं में से दूसरों की तरफ भी भेजा गया जो अभी उनसे नहीं मिले।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक के द्वारा जारी प्रणाली के अलावा कौन है जो आज ईमान दुनिया में स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। जो शांति मुहब्बत और प्यार के साथ इस्लाम का संदेश दुनिया में फैला रहा है। ईमानों को दुनिया में स्थापित करने के लिए कोशिश कर रहा है। कुफ्र तथा नास्तिकता के इस दौर मैं यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत का काम है जिसे हमें करना चाहिए और कर रहे हैं।

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह वादा किया था कि आप के बाद दूसरी कुदरत जो कि ख़िलाफत है इस के द्वारा फिर अल्लाह तआला आप अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करेगा और इस्लाम को फिर विजय प्रदान करेगा और मानने वालों की शान्ति के सामान भी करेगा।

अतः कठिनाइयां भी आएंगी परीक्षाएं भी आएंगे लेकिन अंतिम जीत जमाअत अहमदिया की है इंशा अल्लाह तआला। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा जारी होने वाली ख़िलाफत प्रणाली ही वह वास्तविक प्रणाली है जिसके साथ तरक्कियां जुड़ी हैं और दुनिया की शांति और सुरक्षा भी जुड़ी है।

अस्थायी रोकों के बावजूद इस्लाम की विजय इंशा अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा और आप के बाद जारी ख़िलाफत प्रणाली के द्वारा ही होनी है। विरोधी चाहे जितना मर्जी ज़ोर लगा लें उनके भाग में नामुरादी और विफलता ही है।

आदरणीय चौधरी हमीद अहमद साहिब पुत्र आदरणीय चौधरी मुहम्मद सुलैमान अख्तर साहिब (आफ यू.के) की वफात मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 26 मई 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسۡتَخۡلِفَنَّهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ كَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ۖ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمۡ دِيۡنَهُمُ الَّذِى ارۡتَضٰى لَهُمۡ وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا ؕ يَعۡبُدُوۡنَنِىۡ لَا يُشۡرِكُوۡنَ بِىۡ شَيۡـًٔا ؕ وَ مَنۡ كَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ

(सूरह अन्नूर : 56)

इस आयत का अनुवाद है कि तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह तआला ने मज़बूत वादा किया है कि उन्हें ज़रूर धरती

में ख़लीफा बनाएगा जैसा कि उस ने उन से पहले लोगों को ख़लीफा बनाया और उनके लिए धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया ज़रूर दृढ़ता प्रदान करेगा और उनकी भय की स्थिति के बाद निश्चित रूप से उन्हें शांति की स्थिति में बदल देगा वह मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी को साझी नहीं ठहराएंगे और जो उसके बाद भी कृतघ्न हो तो यही वह लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

यह आयत जैसा कि विषय से स्पष्ट है अल्लाह तआला मुसलमानों से इस वादे को बयान कर रहा है कि इस्लाम में ख़िलाफत स्थापित रहेगी। हाँ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक इरशाद के अनुसार मुसलमानों के कर्म और ईमान की अवस्था के कारण यह पुरस्कार मुसलमानों से एक समय के लिए छिन जाएगा लेकिन साथ यह भी कह दिया कि अल्लाह तआला के वादा के अनुसार मजबूत ईमान वालों और अच्छे कर्म करने वालों और अल्लाह तआला के इस अंतिम सही और पूर्ण धर्म पर चलने वालों में यह प्रणाली फिर से स्थापित हो जाएगी और नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत फिर दुनिया में स्थापित और जारी होगी।

(मस्नद अहमद बिल हंबल जिल्द 6 पृष्ठ 285 हदीस 18596 मस्नद नुअमान बिन बशीर प्रकाशन आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

मुसलमान उलेमा के ग़लत विचारों, पवित्र क़ुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा और उपदेशों की गहराई को न समझने और केवल सतही व्याख्याएं और तफसीरें करने के कारण मुसलमानों का बहुमत इस बात को समझता ही नहीं कि ख़िलाफत की प्रणाली कैसे स्थापित होगी और मुसलमानों में एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो यह कहता है कि किसी ख़िलाफत की ज़रूरत नहीं है और जो जो जिस जिस फिर्के से संबंध रखता है उस पर अनुकरण करे और यही पर्याप्त है क्योंकि आजकल मुसलमानों की दुनिया के सामने जो अवस्था है और जिस तरह इस्लाम बदनाम हो रहा है उसका निहित यही है कि जो जिस तरह रह रहा है, रहे।

मुझे ख़ुद एक मस्जिद के इमाम हैं बल्कि वह मौलवी साहिब अपनी एक संस्था भी चलाते थे। ज़ाहिर है धर्म का ज्ञान रखने वाले हैं इन्हीं पश्चिमी देशों में रहते हैं हम अहमदियों से उनके संबंध भी अच्छे हैं। वह अहमदियों को बुरा नहीं समझते। उन्होंने मुझे कहा कि मैं जिस इस्लामी विचारधारा से संबंध रखता हूं उनके पूर्वजों ने यही कहा है कि किसी धर्म को छेड़ो न और अपना धर्म छोड़ मत। अब जो ऐसे विचार रखने वाले हैं उलेमा कहलाते हैं वे अपने मानने वालों और पीछे चलने वालों को यही सबक देंगे कि एक के किसी एक ख़िलाफत पर एकजुट होने की कोई ज़रूरत नहीं। ये बातें स्पषट करती हैं कि उनके पास व्यक्तगित और फिर्के, मुस्लिम उम्मत के व्यापक हित और एक हाथ में जमा होने की तुलना में अधिक महत्त्व रखते हैं। अत: जब कुरआन की शिक्षा को न समझें और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों पर विचार नहीं तो यही कुछ होता है। मुसलमानों की बल्कि कहना चाहिए कि मुसलमान उलेमा का कम ज्ञान और अज्ञानता का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"कुछ लोग आयत وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسۡتَخۡلِفَنَّهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ كَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ की सार्वभौमिकता से इनकार करके कहते हैं (आम तौर पर जो इसके अर्थ हैं उसका इनकार कर कहते हैं) कि 'मिनकम' से सहाबा ही अभिप्राय हैं और ख़िलाफत राशदा हक्का उन्हीं के समय पर समाप्त हो गई।" (सहाबा के ज़माने तक ख़िलाफत राशदा रही) फरमाया "और फिर(उन लोगों के निकट) क़यामत तक इस्लाम में इस ख़िलाफत का नामोनिशान नहीं होगा। मानो एक सपने और विचार की तरह इस ख़िलाफत का केवल तीस वर्ष ही समय था। और फिर हमेशा के लिए इस्लाम एक अनन्त अशुभ में पड़ गया।" नऊज़ोबिल्लाह। आप फरमाते हैं "परन्तु मैं पूछता हूं कि क्या किसी नेक दिल इंसान की ऐसी राय हो सकती है कि वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में यह विश्वास रखे कि निस्संदेह उनकी शरीयत की बरकत और ख़िलाफत राशदा का समय बराबर चौदह सौ वर्ष तक रहा लेकिन वह नबी जो सब रसूलों में अफज़ल और ख़ातमुल अंबिया कहलाता है और जिस की शरीयत का दामन क़यामत तक फैला हुआ है उसकी बरकत मानो उसी समय तक ही सीमित रहें। और ख़ुदा ने न चाहा कि कुछ अवधि तक उसकी बरकतों के नमूने उस के आध्यात्मिक ख़लीफ़ों के माध्यम से प्रकट हों। ऐसी बातों को तो सुनकर हमारा शरीर कांप जाता है मगर अफसोस कि वे लोग भी मुसलमान ही कहलाते हैं कि जो सरासर चालाकी और बेबाकी के रास्ते से ऐसे बे-अदबाना शब्द मुंह पर ले आते हैं कि मानो इस्लाम की बरकतें आगे नहीं बल्कि ज़माना हुआ कि उनका सफाया हो चुका।

(शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 330)

एक जगह आप ने यह भी फरमाया कि "अगर केवल तीस साल तक ही ख़िलाफत रहनी थी और उसके बाद कुछ नहीं था और यही इस्लाम की कुल उम्र थी तो अल्लाह तआला ताकत रखता था कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीस साल और जीवन दे देता और 93 साल का जीवन कोई ऐसी जीवन नहीं जो असामान्य हो। फिर ख़िलाफत की ज़रूरत क्या थी।

(उद्धरित शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 330)

अत: ऐसे लोग भी हैं जो ऐसे विचार रखते हैं। ये लोग हैं जिनका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुछ विस्तार से नक्शा खींचा है

लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी सांसारिक सरकारों के बलबूते पर अपनी ख़िलाफत स्थापित करना चाहते हैं उनके विचार में ख़िलाफत किसी शक्ति की वजह से स्थापित हो जाएगी और ऐसे ये लोग अल्लाह तआला के इस स्पष्ट संदेश को नहीं समझते कि ईमान और नेक कर्मों के साथ यह वादा शर्त वाला है। अल्लाह तआला वास्तविक आबिद बनने वालों के साथ यह वादा शर्त के साथ है। आम मुसलमानों के इस गलत धारणा के कारण इस्लाम विरोधी ताकतों ने भी इस्लामी दुनिया को कमज़ोर करने के लिए ऐसे संगठनों को स्थापित करने में भूमिका निभाई और सहायता देनी शुरू की जिन्होंने ख़िलाफत के नाम पर अपने आप को संगठित किया लेकिन यह कुछ समय तक सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सांसारिक मालिकों की मदद न मिलने की वजह से या उनके उद्देश्यों पूरे होने की वजह से ख़त्म हो रही हैं।

तीन साल हुए आयरलैंड में मुझे एक पत्रकार ने पूछा कि इस्लामी दुनिया में यह जो ख़िलाफत का अब दौर शुरू हुआ है इस की क्या वास्तविकता है और यह फैलेगी।? तुम्हारी जो ख़िलाफत है इस को इस से क्या खतरा है?। तो मैंने उसे यही जवाब दिया था कि यह ख़िलाफत नहीं। यह उसी तरह चरमपंथी लोगों का एक समूह है जिस तरह तरह पहले समूह काम कर रहे हैं और इसका अंजाम भी अंत वही होगा जो बाकी चरमपंथी समूहों का हो रहा है जब तक सांसारिक आक़ा उनसे खुश रहेंगे यह काम करते रहेंगे जब वह अपने हाथ खींच लेंगे तो धीरे धीरे यह कमज़ोर होना शुरू हो जाएंगे। इन लोगों ने धर्म को क्या दृढ़ता देनी है और क्या उन्होंने शांति स्थापित करनी था। हाँ दुनिया ने यह देखा कि उन्होंने इस्लामी दुनिया की शांति को तबाह तथा बर्बाद कर दिया। इस्लाम विरोधी ताकतों का इस्लामी दुनिया को कमज़ोर करने के लिए एक एजेंडा था उन्होंने वह पूरा कर दिया और इसमें मुसलमान सरकारों के प्रमुख भी शामिल हैं जिन्होंने अपनी कुर्सियों को बचाने के लिए प्रजा का ख़ून किया और अभी तख शांति के बजाय मुसलमान मुसलमान के लिए ही भय पैदा कर दिया है और फिर ग़ैर मुस्लिम दुनिया की शांति को भी यही लोग बर्बाद कर रहे हैं। इस के कारण कुछ भी हों लेकिन एक दर्द रखने वाला मुसलमान जब यह देखता है कि दुनिया में मासूमों की हत्या और विनाश में किसी मुसलमान का हाथ है तो दिल कुढ़ता है, बेचैनी होती है।

पिछले दिनों यहां यू.के में मैनचेस्टर में घटना हुई और बेवजह बाईस तेईस लोगों की हत्या कर दी गई जिसमें मासुम बच्चे भी शामिल थे। यह बहुत क्रूर काम है और किसी भी मामले में यह इस्लाम की शिक्षा नहीं ठहराया जा सकता। ऐसे क्रूर घटनाओं को देख हम बेचैन होते हैं। अल्लाह तआला उन मरने वालों पर भी दया करे और उनके परिजनों को भी धैर्य प्रदान करे और उन ज़ालिमों के हाथों को भी रोके जो इस्लाम के नाम पर और ख़िलाफत के नाम पर ऐसी हरकतें कर रहे हैं।

इसी तरह दुनिया के मुस्लिम देशों में भी जो हत्याओं और ज़ुल्म व बर्बरता हो रही है यह सब धर्म से दूर हटने और अल्लाह तआला के आदेश को न मानने का नतीजा है। इस प्रक्रिया जो इस्लाम की शिक्षा के खिलाफ हो रहे हैं और यह क्रूरता जो इस्लाम के नाम पर हो रहे हैं और इसी तरह वे गलत भी जो मुसलमान सरकारें गैर सरकारों की मदद से मुसलमानों को बढ़ा कर या अंधाधुंध हत्याओं करके कर रही हैं इन सबका दर्द हम अहमदी सबसे महसूस कर सकते हैं जिन्होंने इस्लाम शिक्षा को पहचाना जिन्होंने इस्लाम प्यार और स्नेह और शांति शिक्षा को पहचाना जिन्होंने ख़िलाफत हाथ के पीछे डर शांति में बदलने के नज़ारा देखा । तो हम ही सबसे इसे महसूस कर सकते हैं। उस ज़माने में कुरआन शिक्षा को समझते हुए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पिन ड्रॉप का एहसास मिलता हुए हम अहमदी हैं जो शांति और सुरक्षा लेख टर्मिनेटर ।खिलफ़ाय के साथ जुड़ने की वजह से समझते हैं।

ख़िलाफत न सांसारिक शक्ति से मिल सकती है न सांसारिक चालाकियों से न तथाकथित विद्वानों के इकट्ठे होकर करार दादें पास करने से जैसा कि कुछ साल पहले यह कोशिश भी हो चुकी है कि मुसलमान इकट्ठे हों और अपना कोई

ख़लीफ़ा चुन लें, इस तरह नहीं होगी। ख़िलाफत की प्रणाली जो डर को शांति में बदलने वाला सिस्टम है जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करते हुए, धर्म को दृढ़ता देने का माध्यम बनने वाला है। उसका संबंध इस माध्यम से स्थापित होने वाली ख़िलाफत है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के बताए हुए तरीके के अनुसार प्रकट होना है जिस के बारे में अल्लाह तआला ने कुरआन में सूरत जुम्अ: में कि وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ और उन्हीं में से दूसरों की तरफ भी भेजा गया जो अभी उनसे नहीं मिले। जब यह आयत नाज़िल हुई सहाबा सभा में बैठे थे। एक सहाबी ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा। हे रसूलल्लाह ! वे कौन लोग हैं जो अब उनके साथ नहीं मिले और सहाबा का दर्जा रखते हैं? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसका उत्तर न दिया व्यक्ति ने तीन बार यह सवाल दोहराया उस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सुलैमान फारसी के कंधे पर हाथ रख कर कहा कि अगर ईमान सुरैया के पास भी पहुंच गया तो उन में कुछ लोग उसे वापस लेकर आएंगे। (सहीह अल्बुख़ारी किताब तफसीरुल कुरआन हदीस 4897) और आख़रीन के स्थान के बारे में एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत एक मुबारक उम्मत है यह नहीं पता होगा कि इसका पहला युग बेहतर है या अंतिम युग।(कनज़ुल उम्माल जिल्द 6 भाग 12 पृष्ठ 71 हदीस 34446) अत: अंतिम युग की भलाई की ख़ुशख़बरी भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी है।

क्या यह अंतिम युग इन उलमाओं और राजाओं के पीछे चलने से पहलों वाली बरकत पाने वाला बनाएगा। बेशक नहीं। ये लोग तो दुनियादारी हैं यह उस व्यक्ति के पीछे चलने से मिलेगा जो ईमान वापस दुनिया में लाएगा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक के द्वारा जारी प्रणाली के अतिरिक्त कौन है जो आज ईमान दुनिया में स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। जो शांति मुहब्बत और प्यार के साथ इस्लाम का संदेश दुनिया में फैला रहा है। ईमानों को दुनिया में स्थापित करने के लिए कोशिश कर रहा है। कुफ़्र तथा नास्तिकता के इस दौर मैं यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत का काम है जिसे हमें करना चाहिए और कर रहे हैं। असंख्य घटनाएं हैं मेरे साथ भी और अन्य लोगों के साथ भी होती हैं। शान्ति कांफ्रेसज़ होती हैं, जलसे होते हैं हमारे जलसों में आते हैं। जब हम अपना संदेश इस्लाम का वास्तविक संदेश बताते हैं ग़ैर भी ईसाई भी नास्तिक भी यही कहते हैं कि यह वह मूल संदेश है, यह वह इस्लाम है जिसकी दुनिया को पहुंचाने की ज़रूरत है और अगर यह इस्लाम तुम लोग फैलाओ तो किसी को स्वीकार करने में कोई रोक नहीं होगी। तो यह काम है जो हम ने करना है। धर्म के नवीकरण और ईमान को स्थापित करने के लिए इस युग में मसीह मौऊद और महदी मअहूद के साथ ही जुड़ना होगा जो ख़ातमुल ख़ुलफा भी है।

आख़रीन को पहलों के साथ जोड़ने के बारे में एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

"इस आयत का सारांश है कि ख़ुदा वह ख़ुदा है कि जिसने ऐसे समय में रसूल भेजा कि लोग ज्ञान और ज्ञान से वंचित हो चुके थे और धार्मिक ज्ञान जिनसे नफ्स की पूर्णता होती हो और इसानी नफ़ूस के ज्ञान और व्यवहार पूर्णता तक पहुंचें बिल्कुल गम हो गई थी। (लोग धर्म को बिल्कुल भूल चुके थे। धर्म की जो ज्ञानकी शिक्षा है वह बिल्कुल ख़त्म हो चुकी थी और उसे पूर्णता तक पहुंचाने के लिए, धर्म का ज्ञान की हिक्मत को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए और इंसानी नफ्स के सुधार के लिए ज्ञान और व्यावहारिक स्थितियों में सुधार करने के लिए एक समय था जो कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना था जिसके लिए आप आए क्योंकि यह समय था जब यह बातें बिल्कुल खत्म हो चुकी थीं, गुम हो चुकी थीं) फरमाया "और लोगों को गुमराही में पीड़ित थे अर्थात ख़ुदा और उसके सीधे पथ से बहुत दूर जा पड़े थे तब ऐसे समय में ख़ुदा तआला ने अपना अनपढ़ रसूल को भेजा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके नफ़सों को पवित्र किया और ज्ञान तथा किताब और हिक्मत से उन्हें भर दिया। (किताब के ज्ञान और हिक्मत से उन्हें भरा।) "अर्थात चिन्हों और चमत्कारों से विश्वास के स्थान तक पहुंचाया" (निशान भी दिखाए। चमत्कार भी दिखाए। अल्लाह तआला की कुदरतों के नज़ारे दिखाए और उनके ईमान में इतनी प्रगति हुई कि वह विश्वास के स्तर तक पहुँच गए) "और ख़ुदा को पहचानने के नूर से उनके दिलों को प्रकाशित किया। और फिर आप फरमाते हैं कि "एक समूह और जो अंतिम युग में प्रकट होगा वह भी प्रथम अंधेरे और गुमराही में होंगे और ज्ञान और हिकमत और विश्वास से दूर होंगे तब ख़ुदा उन्हें भी सहाबा के रंग में लाएगा अर्थात जो कुछ सहाबा ने देखा उन्हें भी दिखाया जाएगा यहां तक कि उनकी ईमानदारी और विश्वास सहाबा की ईमानदारी और विश्वास की तरह हो जाएगी।"

(अय्यामुस्सुलह रुहानी खज़ायन भाग 14 पृष्ठ 304)

अत: आप अलैहिस्सलाम ने जहां अपने सहाबा में वह ईमान और विश्वास पैदा किया और उन्होंने अपने ईमान और विश्वास में पूर्ण होने के लिए बलिदान दिए और अंधेरे से बाहर निकले जिसने हर तरफ अंधेरा किया हुआ था दुनिया में ज़लालत छाई हुई थी इस्लाम को लोग भूल रहे थे। आप ने पुन: आकर इस्लाम का पुनर्जागरण फरमाया और उन सहाबा ने मसीह मौऊद के साथ जुड़ कर वह नूर प्राप्त किया जो धर्म का प्रकाश था। विभिन्न निशान देखे जिनका उल्लेख हमारे साहित्य में सैकड़ों हज़ारों में मिलता है। आज भी कई ऐसे हैं जो अंधेरे से निकल कर रोशनियां देख रहे हैं और निशान देखकर जमाअत अहमदिया में शामिल हो रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों के बारे में फरमाया कि "वह ख़ुदा तआला के निशानों और नवीन समर्थनों से नूर और विश्वास पाते हैं जैसा कि सहाबा ने पाया वह ख़ुदा तआला के रास्ते में लोगों के ठट्ठे और हँसी और निन्दा और तरह तरह का दल दुखाना और अपमान और रिश्तेदारों के सम्पर्क काट लेना आदि का सदमा उठा रहे हैं।" (रिश्तेदारियों के छोड़ने के दु:ख उठा रहे हैं।) "जैसा कि सहाबा ने उठाया।"

(अय्यामुस्सुलह रूहानी खज़ायन भाग 14 पृष्ठ 306)

ये घटनाएं केवल तभी नहीं हुए या उसी देश पाकिस्तान या भारत में नहीं हो रहे हैं, जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे। बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में क्योंकि आप सारी दुनिया को उम्मते वहीदा करने के लिए आए थे और ख़ुदा तआला का बन्दा करने के लिए आए थे इसलिए दुनिया के अन्य देशों में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों को इन तकलीफों और परेशानियों से गुज़रना पड़ रहा है लेकिन बहुत धैर्य और दृढ़ता से वे हर सख्ती का सामना कर रहे हैं।

अत: अल्जीरिया का उदाहरण आजकल हमारे सामने है यह कोई इतनी पुरानी जमाअत नहीं है लेकिन मसीह मौऊद को मानकर आख़रीन में शामिल होने के बाद और ख़िलाफत की आज्ञाकारिता में आकर उनके ईमान अल्लाह तआला की कृपा से ऊंचाइयों को छू रहे हैं। उनके कैदियों के ईमान और विश्वास का अनुमान हम इ ख़त से लगा सकते हैं जो एक कैदी ने कल ही मुझे भेजा या कल मुझे मिला। कहते हैं कि अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उसने हमें सच्चे इस्लाम की नेअमत से सम्मानित किया गया है। जिसने हमारे दिलों को पुनर्जीवित किया। मज़बूत बुनियाद वाला बनाया और उसकी ख़ुशी के लिए एक दूसरे से प्रेम करने वाला बनाया और समय के ख़लीफा के हाथ पर एकत्रित किया। मुझे संबोधित करके लिखते हैं कि "सय्यदी ! मौला की राह में कैद के बाद सारे देश से अहमदी भाई आकर मिल रहे हैं और ख़ुदा की विशेष सहायता पर ख़ुश और प्रसन्न हैं" (एक कैद तो है लेकिन अल्लाह तआला के जो पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं उस पर ख़ुशी भी मना रहे हैं।) कहते हैं "उन्होंने आप तक मुहब्बत भरा सलाम और दुआ का अनुरोध पहुंचाने का भी कहा है। सभी इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सच्चाई को ऊंचा करने के लिए काम जारी रखा जाए।"(जितनी चाहे सख़्तियां आए सच्चाई फैलाने के लिए हम अपना काम जारी रखेंगे और अल्लाह तआला से मदद भी मांगेंगे दुआएं करते रहेंगे।) फिर कहते हैं कि "इस परीक्षा ने हमें परस्पर प्रेम और भाईचारा और एकता और सहयोग और ख़िलाफत से प्यार में अधिक बढ़ा दिया है।" फिर लिखते हैं कि " इस परीक्षा में आप की दुआ की स्वीकृति के नमूने हम ने अपनी आँखों से देखे। अल्लाह तआला कई निशान देखे जिन्होंने हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद पर ईमान और विश्वास में बढ़ा दिया हैं।" यह कहते हैं "अल्लाह तआला की रहमतें अल्जीरिया के कमज़ोर अहमदियों पर नाज़िल हो रही हैं।"

पिछले कुछ दिनों में कुछ अल्लाह की राह में कैदी वहाँ रहा भी हुए हैं। अल्लाह तआला बाकी कैदियों की मुक्ति के जल्द सामान पैदा फरमाए।

फिर एक अल्लाह के राह में कैदी लिखते हैं कि "कैद में विश्वास हुआ कि अल्लाह तआला ने विशेष हिक्मत के अधीन यह सामान किया" (अर्थात कि हमें जो कैदी बनाया गया या सज़ाएं मिलीं या मुकदमे चले यह अल्लाह तआला की कोई विशेष हिक्मत थी" "ताकि वह अपने अदभुत कार्यों में से कुछ दिखाए" (वह हमें अपने निशान दिखाना चाहता था अपने चमत्कार दिखाना चाहता था इसलिए उसने यह सख़्तियां भी हम पर वारिद करवाईं।) कहते हैं कि "स्वतंत्रता और आराम के

समय में जीत से हम समझते थे, जो उपलब्धियां हमें हो रही थीं तो हम समझते थे कि हम ने ख़ुदा तआला का चेहरा देख लिया और उसकी राहों से परिचित हो गए हैं लेकिन अब पता चला कि पहले बहुत कम देखा था और अब उसकी कुदरतों के वास्तविक नमूने देखे" कहते हैं कि "मुझे कैद से बिल्कुल कोई परेशानी न थी जिस बात ने परेशान किया वह यह एहसास था कि मैंने अल्लाह तआला और उसकी इबादत का हक़ अदा नहीं किया।" फिर लिखते हैं कि "कैद के समय में कई ख़वाबें देखीं जिन से बड़ा संतोष मिला।" लिखते हैं कि "आप से भी सपनों में मुलाकात हुई।" फिर कहते हैं "आप की दुआएं हमारा ईमान और विश्वास बढ़ाती थीं और कैद में राहत पहुंचाती थीं। हमारी रिहाई बेशक आप और जमाअत के मुख़लेसीन की दुआओं का परिणाम है।" फिर कहते हैं कि "मेरी पत्नी के लिए भी दुआ का अनुरोध है उसने बहुत धैर्य और सबर से काम लिया।" (केवल उनकी पत्नी अहमदी थीं और बाकी सभी रिश्तेदार ग़ैर अहमदी हैं और जब यह कैदी थे तो पहले उसकी पत्नी के पिता वफात पा गए फिर भाइयों ने उसे अहमदियत के कारण छोड़ दिया। जब शोर मच गया तो भाइयों ने भी अपनी बहन को अहमदियत के कारण छोड़ दिया। पति पहले ही जेल में थे। फिर कहते हैं कि कैद समय के दौरान मेरे घर वालों से भी दूर हो रही है वह भी शायद सारे अहमदी नहीं थे कि उनसे भी दूर रही यह। लेकिन निष्ठावती अहमदी औरत ने अपने प्यार से यह कमी पूरी कर दी और उन लोगों का एक परिवार बन गया। अपनों ने छोड़ा तो जमाअत अहमदिया ने उसे अवशोषित कर लिया तो पुरुषों और महिलाओं ने अपनी सीमा में विभिन्न स्थानों पर कुरबानी दीं और दे रहे हैं जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि वह भी अर्थात सहाबा भी तंग किए गए। कठिनाइयों में डाले गए। अपने मानने वालों के बारे में कहते हैं कि वह भी तंग किए गए कठिनाइयों में डाले गए जैसे कि सहाबा लेकिन अल्लाह तआला की कृपा से अल्जीरिया की यह छोटी सी नई जमाअत जो है अपनी परीक्षा में जिस दौर से गुज़र रही है बड़ी दृढ़ है और स्थापित है और अब अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दो ख़तों से ही हो जाता है। और यह भी लिखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा जारी ख़िलाफत की प्रणाली के कारण उनके संतोष साधन होते रहे। विरोधियों को जो डर पैदा करने के लिए कार्रवाई करते थे अल्लाह तआला अपने विशेष कृपा से ख़िलाफत के साथ जुड़े रहने के कारण इसमें उनके लिए संतोषजनक साधन पैदा फरमा देता था और ऐसे असंख्य उदाहरण हैं जहां अल्लाह तआला ने अहमदियों के लिए संतोषजनक साधन पैदा फरमाए हैं। निजी तौर पर भी और जमाअत रूप में भी परेशानी के युग आते हैं। अल्लाह तआला अपने वादे के अनुसार संतोष और शांति के साधन प्रदान करता रहता है यह किसी विशेष युग और समय की बात नहीं है जैसा कि मैंने उदाहरण भी दिए हैं। या इस के साथ शर्त नहीं है अल्लाह तआला ने ईमान लाने वालों और नेक अमल करने वालों से यह वादा किया है कि डरों को उसने दूर करना है लेकिन अल्लाह तआला बार बार मोमिनों को यह ध्यान भी दिलाता है कि वे मेरी इबादत का हक भी अदा करें। तो जब यह हक़ अदा कर रहे होंगे तो बेशक भय की स्थिति भी आएंगी लेकिन डर की स्थिति व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी इस संबंध के कारण, जो ख़िलाफत से होगा, और जो अल्लाह तआला से होगा, वह हालत शांति में में बदल दिए जाएंगे।

अब अल्जीरिया के यह अहमदी जिन में से कुछ एक को छोड़कर किसी ने समय के ख़लीफा को कभी देखा नहीं लेकिन ईमान में पूर्ण होने की वजह से इस तरह अल्लाह तआला उनके लिए संतोषजनक साधन पैदा फरमा रहा है जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में आप के करीबियों में दिल की शान्ति के साधन पैदा हो रहे थे या जमाअत अहमदिया की तारीख़ देखें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा जारी ख़िलाफत की प्रणाली की बरकत से प्रथम ख़िलाफत में भी दिल की शान्ति से साधन पैदा होते रहे। ख़िलाफत सानिया में भी बड़ी कठोर परिस्थितियां आई संतोष के साधन होते रहे ख़िलाफत सालिस: भी बड़ी कठोर परिस्थितियां आई। और उस समय पाकिस्तानी सरकार के प्रमुख ने कहा कि अहमदियों को कशकौल (कटोरा) पकड़ा दूंगा लेकिन अल्लाह तआला प्रचुर मात्रा में सामान प्रदान किए। ख़िलाफत राबिया में भी अल्लाह तआला ने सामान पैदा किए और आज भी अल्लाह तआला इसी तरह सामान पैदा करता चला जा रहा है।

अत: यह कोई इसी जगह के लिए विशिष्ट नहीं बल्कि यह विशिष्ट है उन मामिनों के लिए जो ख़िलाफत के साथ, इस वास्तविक ख़िलाफत के साथ जुड़े रहने वाले हैं जिसे अल्लाह तआला ने जारी किया है। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह वादा किया था कि आप के बाद दूसरी कुदरत जो कि ख़िलाफत है इस के द्वारा फिर अल्लाह तआला आप अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करेगा और इस्लाम को फिर विजय प्रदान करेगा और मानने वालों की शान्ति के सामान भी करेगा। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पत्रिका अलवसियत में अपने इस दुनिया से जाने और ख़िलाफत के द्वारा जमाअत के विकास के जारी रहने के बारे में बताते हुए फरमाते हैं कि

"अत: ! हे प्रियो ! जब कि पुरातन से अल्लाह की पद्धति यही है कि खुदा तआला दो कुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिटा कर दिखलादे सो अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन पद्धति को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास ब्यान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी कुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी कुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीने अहमदिया में वचन है और वह वचन मेरे अस्तित्व के संबंध में नहीं है बल्कि तुम्हारे संबंध में वचन है जैसा कि ख़ुदा फ़र्माता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूँगा सो अवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताकि इसके पश्चात वह दिन आवे जो सदैवी वचन का दिन है वह हमारा ख़ुदा वचनों का सच्चा और निष्ठावान और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिस का उसने वचन दिया यद्यपि यह दिन दुनिया के आख़री दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिन के उतरने का समय है पर अवश्य है कि यह दुनिया कायम रहे जब तक वह सारे वचन पूरे न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी मैं ख़ुदा की ओर से एक कुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् कुदरत हूँ। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी कुदरत के स्वरूप होंगे। अत: ! तुम ख़ुदा की दूसरी कुदरत के इंतज़ार में एकत्र हो कर दुआ करते रहो। तथा चाहिए कि हर एक नेकों की जमाअत हर एक देश में एकत्र होकर दुआ में लगे रहें। ताकि दूसरी कुदरत आकाश से उतरे। तथा तुम्हें दिखादे कि तुम्हारा ख़ुदा ऐसा क़ादिर ख़ुदा है । अपनी मौत को निकट समझो तुम नहीं जानते कि किस समय वह घ‌ड़ी आ जाएगी ।

(रसाला अल्वसियत रूहानी ख़जायन भाग 20 पृष्ठ 305-306)

अत: कठिनाइयां भी आएंगी। परीक्षाएं भी आएंगी लेकिन अंतिम जीत इंशा अल्लाह जमाअत अहमदिया की है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा जारी होने वाली ख़िलाफत प्रणाली ही वह वास्तविक प्रणाली है जिसके साथ तरक्कियां जुड़ी हैं और दुनिया की शांति और सुरक्षा भी जुड़ी है। यही प्रणाली है जिसके द्वारा इस्लाम की बढ़त और प्रभुत्व दुनिया साबित होना है और स्थापित होना है। इसलिए इस विजय की खबर देते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है तथा जब से कि उसने मानव को धरती पर पैदा किया सदैव इस सुन्नत को वह ज़ाहिर करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद शरीफ़

जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

की सहायता करता है तथा उनको विजय देता है जैसा कि वह फ़र्माता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیۡ (सूरह अल्मुजादिल: 22) और विजय से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा का तर्क धरती पर पूर्ण हो जाये तथा उसका मुक़ाबला कोई न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला दृ‹ढ निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है। तथा जिस नेक चलनी को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं उसका बीजारोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है । लेकिन उसकी सम्पूर्णता उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे समय में उनको मौत देकर जो सामान्यत: एक नाकामी का भय अपने साथ रखता है, विरोधियों को हँसी और ठठ्ठे और व्यंग और अपशब्द कहने का अवसर दे देता है और जब वह हँसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी शक्ति का दिखाता है। तथा ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ हद तक अधूरे रह गए थे अपनी सम्पूर्णता को पहुँचते हैं। अर्थात दो प्रकार की कुदरत प्रकट करता है :(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी कुदरत का हाथ दिखाता है। (2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहांत के पश्चात कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जायेगी और स्वयं जमाअत के लोग भी qचता में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई अभागी विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली कुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अत: वह जो अंत तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है जैसा कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के समय में हुआ जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मौत एक बे वक़्त मौत समझी गई तथा बहुत से ना समझ बादियानशीन (वनवासी) विमुख हो गए और सहाबा भी दु:ख के कारण दीवानों की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबुबकर सिद्दीक को ख‹डा करके पुन: अपनी शक्ति का नमूना दिखाया । और इस्लाम को मिटते मिटते थाम लिया और उस वचन को पूरा किया जो फ़र्माया था, وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمۡ دِيۡنَهُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَهُمۡ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمۡ مِّنۡ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا अर्थात् भय के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे

(रसाला अल्वसियत रूहानी ख़जायन भाग 20 पृष्ठ 304-305)

अल्लाह तआला का यह बड़ा एहसान है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की मृत्यु के बाद एक झटका तो जमाअत को लगा लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल द्वारा जमाअत को तुरंत संभाल लिया। अगर किसी की कोई शरारत की इच्छा थी भी तो वह जल्द ही काबू में आ गए। फिर हज़रत ख़लीफातुल मसीह अव्वल की मृत्यु के बाद जमाअत को एक बड़ा झटका लगा और जमाअत के कुछ प्रमुख बैअत करने वालों की जमाअत से अलग हो गए ख़िलाफत का इनकार करने वाले भी हो गए और काफी कठोर परिस्थितियां थी एक लंबा विस्तार है लेकिन परिणाम क्या हुआ अंत में ख़िलाफत ही सफल हुई और उपलब्धियों की राहों पर चलती चली गई और मंज़िलें तय करती चली गई। फिर ख़िलाफत सालिस: जैसा कि मैंने उल्लेख किया एक कठिनताओं का युग आया लेकिन इसके बावजूद अल्लाह तआला ने फज़ल फरमाया हुकूमत ने भयानक परियोजनाएं बनाई थीं लेकिन जमाअत के विकास में कोई रोक पैदा नहीं हो सकी ख़िलाफत राबिया में ओर अधिक सख्ती पाकिस्तान की सरकार ने दिखाई तो इस परीक्षा में भी अल्लाह तआला ने संतोषजनक साधन पैदा फरमा दिए। जमाअत नई मंज़िलें तय करने लगी तब्लीग़ के नए नए रास्ते खुलने लगे और फिर उपग्रह के माध्यम से दुनिया में तब्लीग़ की जाने लगी। फिर ख़िलाफत खामिस: में भी नए मार्गों में अधिक विस्तार पैदा हुआ जमाअत का संदेश हज़ारों से निकल कर बल्कि लाखों से निकल कर करोड़ों में जाने लग गया। एक देश या दो देशों की स्थान पर कई देशों में अब विरोध शुरू हो गया है और यही अहमदियत की सच्चाई की दलील और यही विकास की निशानी भी है। अहमदियत से पीछे हटाने की कोशिशें हो रही हैं लेकिन अल्लाह तआला अपने वादे के अनुसार तरक्की की राहें खोलता चला जा रहा है और तरक्की होती चली जा रही है और यह सब बातें दिखाती हैं कि अस्थायी रोकों के बावजूद इस्लाम की विजय इंशा अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा और आप के बाद जारी ख़िलाफत की प्रणाली के द्वारा ही होनी है। विरोधी चाहे जितना मर्जी ज़ोर लगा लें उनके भाग्य में नामुरादी और विफलता ही है। अल्लाह तआला प्रत्येक को तौफ़ीक़ दे कि वे अपने ईमान भी मज़बूत हो और अच्छे कर्मों को करने वाला और इबादतों की गुणवत्ता भी हर अहमद बुलंद होती चली जाएं ताकि हम हमेशा इस तरक्की का हिस्सा बनने वाले रहें।

जुम्अ: की नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा हाज़िर भी पढ़ाऊंगा (जनाज़ा आ गया है ना ?) जो चौधरी हमीद अहमद साहब पुत्र चौधरी मुहम्मद सुलैमान अख्तर साहिब का है। यह पिछले सात आठ साल से यहीं रहते थे। 20 मई 2017 ई को 42 साल की उम्र में कैंसर से मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत चौधरी मौला बख़्श साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के प्रपौत्र थे। अपने परिवार के साथ 1990 में हिजरत करके जर्मनी आए और वहाँ भी जमाअत का सेवाओं में आगे आगे रहे। वहाँ सचिव प्रचार स्थानीय रहे। कायद मजलिस रहे। ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी की मुअतमिद रहे इस के अतिरिक्त क्षेत्रीय इमारत में बतौर सचिव अमूरे आम्मा सेवा की तौफ़ीक़ पाई। फिर बोस्निया का जो पहला जलसा था इसमें जर्मनी के प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुए। खेल का भी बड़ा शौक था। तब्लीग़ स्टाल बड़े शौक से और ध्यान से लगाते थे। कभी कोई सहायक मयस्सर न आता तो ख़ुद ही अकेले स्टालों के लिए निकल जाते। 2009 ई में जर्मनी से यू.के आ गए और यहाँ आकर क्षेत्रीय नाज़िम तालीम अत्फाल की स्थिति से सेवा की और बड़ी उच्च स्थिति प्राप्त कर ली।अपनी मज्लिस के अत्फाल को बड़ी तरक्की दी। तब्लीग़ का शौक भी जैसा कि मैंने कहा था बहुत था। ख़ुद्दामुल अहमदिया में भी और अंसारुल्लाह में भी विभिन्न पदों में सेवा करने की तौफीक मिली। कार्यालय निजी सचिव में स्थायी रूप से यह स्वेच्छा से काम करते थे और हमारी डाक निकालने में बहुत मदद करते थे। इसके अलावा सेवक के तौर पर सुरक्षा ड्यूटी भी देते थे बल्कि मैं तो कई बार समझता था कि शायद यह कोई काम करते ही नहीं। पूरा दिन यहीं मस्जिद के पास ही रहते हैं लेकिन अपना निजी काम भी करते थे और इसमें समय निकालते थे और कई कई घंटे कार्यालय निजी सचिव को दिया करते थे। इसी तरह ख़ुद्दाम की डयूटियों को भी। मरहूम मूसी थे आप के पीछे रहने वालों में पत्नी के अलावा एक बेटी और चार बेटे हैं उनके पिता भी जीवित हैं। भाई हैं। उनके पिता सुलेमान अख़्तर साहिब लिखते हैं कि मेरा बेटा बहुत आज्ञाकारी था। बचपन से ही जमाअत के कार्यों में संलग्न रहा हर समय उसके मन में धर्म की सेवा का जुनून जोश मारता रहता था। सेवा का कोई मौका उसे मयस्सर आया उसने इससे भरपूर फायदा उठाया। बच्चों को नमाज़ जमाअत के साथ नमाज़ लिए मस्जिद में ले जाते। यहां तक कि बीमारी के दिनों में भी ज़रा तबियत संभली तो इस तरीका का पालन करते और उन्होंने अपनी बीमारी से अंत तक बड़ी हिम्मत बड़ा मुकाबला किया और घर बैठ भी सचिव वक़्फे नौ के अपने काम पूरा करते रहे। उनकी पत्नी ने भी यही लिखा है कि बच्चों के साथ दोस्तों जैसा संबंध था और उनके प्रशिक्षण का हर समय विचार रहा और फिर यह भी कि हमारी शादी को पंद्रह साल हो रहे हैं आज तक कभी ज़ोर से उन्होंने बात नहीं की।

यू.के के मुहतमिम मुकामी लिखते हैं कि ख़िलाफत अहमदिया और जमाअत की प्रणाली से जुनून की हद तक प्रेम था। हमेशा जमाअत के कार्यों को पहले रखते थे। बीमारी की वजह से दो तीन बार अस्पताल में भर्ती रहे हैं लेकिन जब ज़रा सी तबीयत बेहतर होती थी तुरंत अपने काम में आ जाया करते थे। कई बार एहसास भी नहीं होता था कि बीमार हैं। अंतिम बीमारी में यही कहते थे कि मुझे इस बात का खेद है कि यह कि मस्जिद में जाकर नमाज़ें नहीं पढ़ सकता। उनके एक दोस्त लिखते हैं कि टैक्सी करते थे। मेरे साथ टैक्सी स्टैंड पर उनका पहला नंबर था और मेरा उनके बाद था तो नमाज़ का समय हुआ तो यह चले गए और मैं इसलिए कि कोई सवारी आ जाएगी वहाँ खड़ा रहा लेकिन हुआ यह कि नमाज़ पढ़कर वापस भी आ गए और फिर सवारी उन्हीं को पहले मिली और मुझे नहीं मिली तब से मुझे भी सबक मिला कि अपने सांसारिक कार्यों को धर्म के लिए कुरबान करना चाहिए। इबादत जो है अल्लाह तआला का कर्तव्य जो है उसे बहरहाल पहले अदा करना चाहिए। इस लिहाज़ से यह अपने साथियों की बड़ी खामोशी से प्रशिक्षण भी कर दिया करते थे।

प्रत्येक के काम आना उनकी विशेष विशेषता थी। इन के एक दोस्त कहते हैं कि रात दो बजे भी कोई काम होता तो तुरंत कहते कि मैं कर दूंगा। अताउल मुजीब राशिद साहिब लिखते हैं कि मिशनरी स्टालों पर बड़ा नियमित जाते थे और बड़ा हंसता मुस्कुराते थे। सबको सलाम करके यह काम करते बल्कि कहते हैं कि एक बार उनके किसी दोस्त से उनका हाल पूछा तो उन्होंने कहा कि आज उनकी तबियत ज़रा बेहतर थी इसलिए वह तब्लीग़ के लिए निकल गए हैं। अल्लाह तआला उनके स्तर बढ़ाए। दया और माफी का व्यवहार करे और उनके बच्चों को भी नेक सालेह बनाए और ख़िलाफत से हमेशा जुड़े रखे।

जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद जनाज़ा हाज़िर है मैं बाहर जाकर जनाज़ा अदा करूंगा और आप लोग यहीं मस्जिद में पंक्तियाँ बना लें।

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अतः एक और रमज़ान का हमारे जीवन में आना और अल्लाह तआला का यह फरमाना कि रमज़ान इसलिए आता है कि तुम तक्वा धारण करो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह फरमाना कि इस सिलसिले को अल्लाह तआला ने तक्वा के लिए ही स्थापित किया है हम पर बड़ी जिम्मेदारी डालता है कि हम हर समय अपनी अवस्थाओं की समीक्षा करते रहें और अल्लाह तआला जो यह विशेष फज़्ल के दिन रखे हुए हैं उनमें अपने अंदर ऐसा परिवर्तन पैदा करें और अपने तक्वा के मानकों को ऐसा बढ़ाने की कोशिश करें जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है और फिर रमज़ान तक ही सीमित न रहें बल्कि अपने जीवन का हिस्सा बना लें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक प्रदान करे।

कुरआन मजीद, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से रमज़ान के महीने की फज़ीलत, इस का उद्देश्य, तक्वा की प्राप्ति, इस के स्तर, और शिष्टाचार का ईमान वर्धक वर्णन और इस बारे में जमाअत के लोगों को प्रमुख नसीहतें।

आदरणीय ख़वाजा अहमद हुसैन साहिब दरवेश कादियान पुत्र आदरणीय मुहम्मद हुसैन साहिब की वफात मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 2 जून 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ - اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ - غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ -

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

(सूरह अल्बकरः 184)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े उसी तरह फर्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह से तुम से पहले लोगों पर रोज़े फर्ज़ कर दिए गए थे ताकि तुम तक्वा धारण करो।

अल्हम्दो लिल्लाह कि हमें अपने जीवन में एक और रमज़ान के महीने से गुज़रना नसीब हो रहा है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि अगर लोगों को रमज़ान की बरकतों का ज्ञान होता तो मेरी उम्मत इस बात की इच्छा करती कि सारा वर्ष ही रमज़ान हो। इस पर एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह तआला के नबी रमज़ान की बरकतें क्या हैं? आपने फ़रमाया बेशक जन्नत को रमज़ान के लिए साल की शुरुआत से अंत तक सजाया जाता है।

(मअजमल कबीर जिल्द 22 पृष्ठ 388-389 हदीस 967 अबू मसूद ग़फ्फारी)

इसी तरह एक और रिवायत में है जो हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है आप बताते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े ईमान की स्थिति और अपना आत्मनिरीक्षण करते हुए रखे उसके पिछले गुनाह माफ कर दिए जाएंगे। (सहीह अल्बुख़ारी किताबुल ईमान हदीस 38) और अगर तुम्हें पता होता कि रमज़ान की क्या क्या फज़ीलतें हैं तुम निश्चित रूप से इस बात के लिए उत्सुक होते कि सारा साल ही रमज़ान हो।

अतः रमज़ान की फज़ीलतें न केवल महीने के दिनों से है, न केवल एक समय तक खाने-पीने के रुकने से है। केवल इस बात के लिए पूरा साल अल्लाह तआला की तैयारी नहीं होती। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो दूसरी हदीस है इसमें स्पष्ट रूप से फरमा दिया कि ईमान की स्थिति में रोज़ा और अपने स्वयं के आत्मनिरीक्षण करके अपने दिन और रात रमज़ान में बिताने से ही यह स्थान मिलता है और जब यह स्थिति होगी तो तभी पिछले गुनाह भी माफ होते हैं। व्यक्ति ईमान में तरक्की करता है अपना स्वयं का आत्मनिरीक्षण करता है अपनी कमज़ोरियों को देखता है अपने कर्मों को देखता है अल्लाह तआला के अधिकार और बन्दों के अधिकार अदा करता है और अपने कर्मों को अल्लाह तआला की ख़ुशी के अनुसार करने की कोशिश करता है तो तभी गुनाहों की क्षमा भी होती है और यही उद्देश्य अल्लाह तआला ने कुरआन में भी रमज़ान के रोज़ो का प्राप्त करने का उल्लेख किया है।

इस आयत में जो मैंने तिलावत की है कि तुम पर रोज़ा इसलिए फर्ज़ किए गए हैं, रमज़ान का महीना हर साल इसलिए निर्धारित किया गया है, ताकि तुम तक्वा धारण करो और तक्वा यही है कि हर काम ख़ुदा तआला की ख़ुशी के लिए हो तभी तुम रोज़ा से लाभान्वित हो सकते हो और शैतान के हमलों से बच सकते हो। जब पवित्र होकर अल्लाह तआला का तक्वा धारण करते हुए रोज़ा रखोगे तो अल्लाह तआला की पनाह में आओगे और जब इंसान अल्लाह तआला की पनाह में आए तो तभी शैतान से बच सकता है अन्यथा शैतान की यह खुली चुनौती है कि थोड़ा व्यक्ति अल्लाह तआला की शरण से दूर हुआ तो तुरंत उसे शैतान ने दबोचा। अपने नियंत्रण में कर लिया। अत: ईमान में तरक्की और अपना आत्मनिरीक्षण ही इंसान को अल्लाह तआला की पनाह वाला बनाता है और यह तभी हो सकता है जब व्यक्ति तक्वा पर चलने वाला हो।

ईमान की स्थिति और गुणवत्ता और तक्वा की हालत और गुणवत्ता क्या होनी चाहिए और यह कैसे प्राप्त कर सकते हैं? इस के बारे में हमें वही सही बता सकता है जिसे अल्लाह तआला ने इस काम पर तैनात किया हो और यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम और ज़माना के इमाम के माध्यम से ही पता चल सकता है कि आप अलैहिस्सलाम को इस काम के लिए ही अल्लाह तआला ने भेजा है। आप ही हैं जिन्होंने ईमान फिर पृथ्वी पर लाकर दिलों में तक्वा पैदा करने और स्थापित करने के तरीके सिखाने थे। इसलिए हम देखते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें आप की विभिन्न मज्लिसों में बातें आप के उपदेश विभिन्न तरीकों से इस तरफ मार्गदर्शन करते हैं।

जैसा कि हदीस में आया है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने रोज़ा ईमान की स्थिति में रखे, अपना आत्मनिरीक्षण कर के रखे, उसके गुनाह माफ कर दिए जाएंगे। यह कोई मामूली बात नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया कि ईमान की स्थिति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि ख़ुदा तआला की पहचान न हो। आपने फ़रमाया कि भारी कदम जो हमने तय करना है वह ख़ुदा तआला की पहचान है उसे पहचानना है और अगर हमारा ख़ुदा तआला को पहचानना ही घटिया और संदिग्ध और धुंधला है तो हमारा ईमान कभी मुनव्वर और चमक वाला नहीं हो

सकता और ख़ुदा तआला को पहचानना कैसे होगा? यह अल्लाह तआला के विशेषण रहीमयत के जलवे से होगा। ख़ुदा तआला की पहचान अल्लाह तआला का जो विशेषण रहीमयत है उसके प्रकट होने से होती है। ऐसा संबंध ख़ुदा तआला से बनाने से होगा जिस में ख़ुदा तआला की रहीमयत और फज़ल और कुदरत के गुण हमारे अनुभव में आएंगी। और ये बातें उस समय अनुभव में आ सकती हैं जब ख़ुदा तआला की इबादत और उस से संबंध की असामान्य अभिव्यक्ति हो रही हो। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की रहीमयत और फज़ल और कुदरत के गुण जब अनुभव में आते हैं तो वह नफ्सानी भावनाओं से छुड़ाती हैं और नफ्सानी भावनाऐं ईमान की कमज़ोरी और विश्वास की कमज़ोरी की वजह से पैदा होते हैं। अगर ईमान कमज़ोर न हो अल्लाह तआला पर ईमान हो तो नफ्सानी भावना पैदा नहीं होतीं। आपने फरमाया कि इस दुनिया की संपत्तियां, इस की सुविधाएं, इसकी दौलतें जितना इंसान को प्यारी हैं उतना दूसरे जीवन की सुविधाएं उसे प्यारी नहीं।

(उद्धरित अय्यामुस्सुलह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 244-245)

कहने को तो आदमी कहता है कि मुझे आख़री जीवन की नेअमतें प्यारी हैं क्योंकि अगर परलोक के जीवन की नेअमतें भी उतनी ही प्यारी होती तो उन्हें प्राप्त करने के लिए भी उतनी ही कोशिश होती जितनी इन सांसारिक चीज़ों को प्राप्त करने के लिए होती है, लेकिन इससे बढ़कर होती। अत: स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला की शक्ति और रहीमियत और वादों पर वास्तविक ईमान नहीं है और इस बात की समीक्षा की ज़रूरत है।

अत: इस विवरण के बाद ही यह बात अच्छी तरह समझ आ सकती है कि ईमान कोई मामूली बात नहीं है। यह बहुत बड़ी बात है। एक बहुत बड़ा लक्ष्य है जो हमें दिया गया है। केवल तीस दिन के रोज़ा के लिए या रमज़ान का महीना आने के लिए तैयारियां नहीं होतीं न उनका कोई महत्त्व है। यह महत्त्व तभी बढ़ता है जब हमारी यह सारी कोशिशें इस महीने के प्रशिक्षण से सारे वर्ष के कर्मों पर फैल जाएं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो शब्दों में हमारे सामने पूरे जीवन की रणनीति रखी दी। हमारे मुंह से कह देने से कि हम ईमान की स्थिति में रोज़ा रख रहे हैं इसलिए हमारे सारे गुनाह बख़्शे जाएंगे क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया दिया, यह पर्याप्त नहीं। जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपना आत्मनिरीक्षण करते हुए रोज़ा रखो तो इसका यही मतलब है कि अपने ईमान को इस कसौटी पर रखकर परखना होगा जो अल्लाह तआला से संबंध बढ़ाने की कसौटी है। उसकी आज्ञाओं का पालन करने की कसौटी है। अत: यह देखना है कि हम उस पर अनुकरण कर रहे हैं या नहीं।

ईमान की स्थिति और इसे ठीक करने के तरीके बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"बात यह है कि ख़ुदा तआला पर ईमान दो प्रकार का है एक वह ईमान है कि केवल ज़बान तक सीमित है और इसका असर कार्यों और कर्मों पर कुछ नहीं होता। (ज़बान तक ईमान है। अपने कर्मों से कोई ईमान प्रकट नहीं हो रहा होता) दूसरी किस्म ईमान बिल्लाह की है कि व्यावहारिक मामले इसके साथ हों तो जब तक यह दूसरी प्रकार का ईमान पैदा न हो मैं नहीं कह सकता कि एक आदमी ख़ुदा को मानता है यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि एक व्यक्ति अल्लाह तआला को मानता भी हो और फिर गुनाह भी करता हो। दुनिया का बड़ा हिस्सा पहली किस्म के मानने वालों का है।"

आप फरमाते हैं कि "मैं जानता हूँ कि वे लोग स्वीकार करते हैं हम ख़ुदा तआला को मानते हैं परन्तु मैं देखता हूं कि इस स्वीकार के साथ ही वह दुनिया की गंदगियों में पीड़ित और गुनाह में पड़े हुए हैं।" फरमाया "फिर वह क्या बात है कि वह विशेषता जो ईमान बिल्लाह की है उसे साक्षी मान कर पैदा नहीं होती?" फरमाया "देखो आदमी एक निम्न स्तर के चूहड़े चमार को समक्ष देखकर उसकी चीज़ नहीं उठाता फिर ख़ुदा तआला का विरोध और उसके आदेशों के उल्लंघन में साहस और हिम्मत क्यों करता है जिस के विषय में कहता है (कि) मुझे यह स्वीकार है।" (मैं इस पर ईमान लाता हूं।) फरमाया "मैं इस बात को मानता हूं कि दुनिया के अक्सर लोग हैं जो अपनी ज़बान से स्वीकार करते हैं कि हम ख़ुद को मानते हैं। कोई परमेश्वर कहता है। कोई गॉड कहता है कोई अन्य नाम रखता है। मगर जब व्यावहारिक पहलू से उनके ईमान और स्वीकार करने की परीक्षा ली जाए और देखा जाए तो कहना होगा कि वह केवल दावा है जिसके साथ व्यावहारिक गवाही कोई नहीं।"

फरमाया कि "मानव प्रकृति में यह बात है कि वह जिस चीज़ पर विश्वास करता है, उस के नुकसान से बचने और उसके लाभ को लेना चाहता है। देखो संखिया एक ज़हर है और आदमी जबकि इस बात का ज्ञान रखता है कि एक रत्ती भी मारने को पर्याप्त है तो कभी वह उसे खाने के लिए साहस नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि उसका खाना मौत होना है तो क्यों वह ख़ुद तआला को मानकर उनके परिणाम उत्पन्न नहीं करता जो ईमान बिल्लाह के हैं।" फरमाया "अगर संखिया के बराबर भी अल्लाह तआला पर ईमान हो तो उसकी भावनाओं और जोशों पर मौत वारिद हो जाए, लेकिन नहीं। यह कहना होगा कि केवल कहना ही कहना है ईमान को विश्वास का रंग नहीं दिया गया है यह अपने नफ्स को धोखा देता है।" (ईमान जब हो तो उस पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए, उसे विश्वास का रंग मिलना चाहिए क्योंकि वह विश्वास का रंग नहीं है इसलिए फरमाया कि नफ्स को धोखा देता है) "और धोखा खाता है जो कहता है कि मैं ख़ुदा तआला को मानता हूं" फरमाते हैं कि "अत: पहला कर्तव्य व्यक्ति का यह है कि वह अपने इस ईमान को पूर्ण करे जो वह अल्लाह तआला पर रखता है अर्थात उसे अपने कर्मों से साबित कर दिखाए कि कोई कर्म ऐसा इससे घटित न हो जो अल्लाह तआला की शान और उसकी आज्ञाओं के खिलाफ हो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 312-313 प्रकाशन 1985ई यू. के)

अत: यह है एक मोमिन का आत्मनिरीक्षण का तरीका। रमज़ान के महीने में एक विशेष परिवेश बना होता है और दूसरों की देखा देखी भी इबादतों और नेकियों ध्यान पैदा हो रही है। ऐसे माहौल में इबादतों और नेकियों की तरफ ध्यान करते हुए, अपने कर्मों की ओर ध्यान देते हुए, हमें अपने ख़ुदा के आगे झुकते हुए पिछले गुनाहों की माफी मांगनी चाहिए और फिर इस रमज़ान की इबादतों को और इस में परिवतर्नों को जीवन का स्थायी हिस्सा बना लेना चाहिए और इसमें जो गुनाह क्षमा हुए या जन्नत के दरवाज़े खोले गए वे फिर हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि यह खुले रहें और रमज़ान की बरकतों से भाग लेने के लिए बहुत विनम्रता से अल्लाह तआला के सामने झुकते हुए हमें कोशिश करनी चाहिए कि अल्लाह तआला करे कि उसकी बरकतें हम पाते चले जाएं और अल्लाह तआला ने हमारे सामने रोज़ों का जो लक्ष्य रखा है कि तक्वा प्राप्त करो उसकी भी गुणवत्ता हमें पाने की कोशिश करनी चाहिए।

तक्वा में तरक्की के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें जो विभिन्न माध्यम से समझाया है इस बारे में भी आप के हवाले से कुछ बातें प्रस्तुत करता हूँ। इंसान की ईमानी हालत भी उस समय तरक्की करती है जब तक्वा में तरक्की हो। अत: जैसा कि पहले उल्लेख आ चुका है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि ईमान की स्थिति और आत्मनिरीक्षण करते हुए रमज़ान गुज़ारो तो इसका मतलब ही यह है कि तक्वा में तरक्की करके अपनी अवस्थाओं को अल्लाह तआला की ख़ुशी के अधीन करते हुए यह दिन बिताओ और अगर इसमें सफल गुज़र गए तो तक्वा जीवन का स्थायी हिस्सा बन जाएगा। अपनी व्यावहारिक अवस्थाओं को मनुष्य केवल रमज़ान में ही ठीक नहीं करेगा बल्कि यह फ़ैज़ जारी फ़ैज़ होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ओर हमें ध्यान दिलाते हुए फरमाया कि कुरआन और इस्लाम की शिक्षा का उद्देश्य तो तक्वा पैदा करना था वही हमें आज नजर नहीं आता। रोज़ा रखते हैं नमाज़ें पढ़ते हैं लेकिन तक्वा से खाली होने के कारण यही नमाज़ें और रोज़ा उन्हें गुनहगार बना रहे हैं। यह इस्लाम के नाम पर जो आजकल हम देखते हैं आतंकवाद हो रहा है। मासूमों को कत्ल किया जा रहा है यह इसलिए है कि तक्वा नहीं रहा। दो दिन पहले अफगानिस्तान में भी बड़े क्रूर रूप में सौ के करीब लोगों को हत्या कर दी गई। क्या उन लोगों को रमज़ान कोई लाभ देगा या रमज़ान की नेकी पाने वाले होंगे इससे फ़ैज़ पाने वाले होंगे।? बेशक नहीं क्योंकि यह अल्लाह तआला की आज्ञाओं के खिलाफ करने वाले लोग हैं। ये अल्लाह तआला के आदेशों से दूर हट रहे हैं और यह तक्वा से दूर हैं इसलिए और ठीक कुरआन की शिक्षा के अनुसार ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह फरमाया है कि बिना तक्वा के नमाज़ें भी व्यर्थ और जहन्नम की कुंजी हैं। जहन्नम की चाबी हैं उसकी ओर ले जाने वाली हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 48 प्रकाशन 1985ई यू. के)

अत: ऐसे लोगों को रमज़ान कैसे लाभ दे सकता है जो तक्वा से खाली हैं जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर अत्याचार करते हैं वह कभी रमज़ान से फ़ैज़ उठाने वाले नहीं हो सकते बल्कि अल्लाह तआला की पकड़ में आने वाले हैं।

अत: ऐसे समय में जब ज़ुल्म व बर्बरता की इन घटनाओं को सुनते और देखते हैं तो हम अहमदियों को पहले से बढ़कर इस्तिग़फार करते हुए अल्लाह तआला की स्तुति करते हुए कि उस ने हमें इन ज़ालिम लोगों से अलग कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फरमाई, अपने कर्मों पर नज़र रखनी चाहिए, अपने ईमान की मजबूती की चिंता करनी चाहिए। इस बात पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें आप वह रास्ते दिखाए जो ख़ुदा तआला से मिलाने के रास्ते हैं।

आपने फ़रमाया कि ईमान की जड़ तक्वा और पवित्रता है फरमाया कि इसी से ईमान शुरू होता है और इसी से उसकी सिंचाई होती है और नफ्सानी भावनाएं दबाते हैं।

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 243 प्रकाशन 1985ई यू. के)

अत: आप के इस इरशाद यह बात और अधिक खुल गई कि ईमान बिना तक्वा के उत्पन्न हो ही नहीं सकता और न केवल कि ईमान जड़ तक्वा है बल्कि ईमान की रक्षा और पोषण भी तक्वा के बिना नहीं हो सकती। तक्वा होगा तो कर्म नेक होंगे और कर्म नेक होंगे और अल्लाह तआला की ख़ुशी के अनुसार होंगे तो ईमान में तरक्की उत्पन्न होगी। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि रमज़ान की फज़ीलत के फल भी तक्वा में बड़ें बिना नहीं हो सकता। तक्वा बढ़ेगा तो ईमान बढ़ेगा आत्मनिरीक्षण पर ध्यान होगा और जब आत्मनिरीक्षण पर ध्यान होगी अपनी समीक्षा आदमी लेगा तो नफसानी भावना भी फिर दबेंगी और जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है नफसानी भावनाओं का दबना ही अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करके उसकी निकटता दिलाता है।

मूल तक्वा की वास्तविकता को अधिक बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मूल तक्वा जिस से व्यक्ति धोया जाता है और साफ होता है और जिसके लिए नबी आते हैं वह दुनिया से उठ गया है। कोई होगा जो قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا (अश्शमस 10) का मिसदाक़ होगा। स्वच्छता और पवित्रता उत्कृष्ट वस्तु है। मनुष्य शुद्ध और पवित्र हो तो फरिश्ते उस से हाथ मिलाते हैं लोगों में उस का सम्मान नहीं है अन्यथा उनकी सुख की प्रत्येक वस्तु हलाल माध्यमों से उन्हें मिले।" (अगर लोगों में तक्वा का सम्मान हो तो जो भी सांसारिक सुख हैं आपने फरमाया कि वह भी तुम्हें हलाल माध्यम से मिलें न कि हराम माध्यम से, अवैध माध्यम से।) फरमाया कि "चोर चोरी करता है कि माल मिले लेकिन अगर वह धैर्य करे तो ख़ुदा तआला उसे और राह से धनी कर दे। इसी तरह व्यभिचारी व्यभिचार करता है अगर धैर्य करे तो ख़ुदा तआला उसकी इच्छा और रास्ते से पूरी कर दे जिस में उसकी प्रसन्नता प्राप्त है।" आप फरमाते हैं कि "हदीस में है कि कोई चोर चोरी नहीं करता लेकिन इस हालत में कि वह मोमिन नहीं होता और कोई व्यभिचारी व्यभिचार नहीं करता लेकिन इस हालत में कि वह मोमिन नहीं होता।" (जब ईमान की अवस्था समाप्त हो जाती है तो फिर ही ऐसे कर्म होते हैं।) आप फरमाते हैं कि "जैसे बकरी के सिर पर शेर खड़ा हो तो वह घास भी नहीं खा सकती तो बकरी जितना ईमान भी लोगों में नहीं है।"

क्योंकि मज्लिस में चर्चा हो रही थी इसलिए इस बात की अखबार में दूसरी जगह इस तरह बयान हुई है कि आपने फ़रमाया कि "हदीस में आया है कि चोर चोरी नहीं करता जब कि मोमिन हो। यह बिल्कुल सच बात है बकरी के सिर पर अगर शेर हो तो उसे हलाल खाना भी भूल जाता है यहां तक कि वह किसी दूसरे के खेत में जाए। इसी तरह से ख़ुदा तआला का भय हो तो संभव नहीं कि गुनाह करे।

फरमाते हैं कि "मूल जड़ और गंतव्य तक्वा है। जिसे वह प्राप्त हो तो सब कुछ पा सकता है बिना इस के संभव नहीं कि इंसान छोटे और बड़े गुनाहों से बच सके।" (बड़े गुनाहों छोटे गुनाहों से बच सके।) फरमाया मानवीय हुकूमतों के आदेश गुनाहों नहीं बचा सकते। अधिकारी साथ-साथ तो नहीं फिरते कि उन्हें डर रहे।" (लोगों को उनका डर रहे।) "मनुष्य अपने आप को अकेला सोच करके गुनाह करता है अन्यथा वह कभी न करे और जब वह अपने आप को अकेला समझता है तो उस समय वह नास्तिक होता है।" (जब अकेला समझता है तो ज़ाहिर है कि वह समझता है ख़ुदा तआला मुझे नहीं देख रहा तो मतलब है कि वह उस समय नास्तिक होता है) "और विचार नहीं करता कि मेरा ख़ुदा मेरे साथ है, वह मुझे देखता है अन्यथा यदि वह यह समझता तो कभी गुनाह न करता।" फ़रमाते हैं "तक्वा से प्रत्येक वस्तु है।(सब कुछ तक्वा पर ही निर्भर है) "कुरआन ने आरम्भ इसी से किया है। اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ से अभिप्राय भी तक्वा है कि इंसान अगर पालन करता है लेकिन डर साहस नहीं करता कि उसे अपनी तरफ मंसूब करे और उसे ख़ुदा तआला की सहायता से विचार करता है और फिर इसी से भविष्य के लिए सहायती माँगता है।(اِيَّاكَ نَعۡبُدُ इंसान कहता है। तेरी इबादत करते हैं। इंसान स्वयं इबादत कर रहा है, पालन कर रहा है, लेकिन उसे अपनी तरफ सम्बंधित नहीं करता आप ने फरमाया कि इस के बावजूद कि वह पालन कर रहा है और اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ कह देता है कि यह इबादत जो है यह भी तेरी सहायता की वजह से ही हो रही है तू तौफीक दे रहा है तो इबादत हो रही है अन्यथा यह इबादत नहीं हो सकती और फिर भविष्य के लिए भी सहायता माँगता है कि आगे भी अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे कि इबादत की तौफ़ीक़ मिलती रहे। तो यह है तक्वा की गुणवत्ता।

फिर फरमाया कि "दूसरू किस्म भी هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ से शुरू होती है।" आप कहते हैं कि "नमाज़ रोज़ा ज़कात आदि सब उसी समय स्वीकार होता है जब व्यक्ति मुत्तकी होता है" (अत: तक्वा होगा तो यह बातें स्वीकार होंगी। अगर तक्वा नहीं तो यह बातें भी स्वीकार्य नहीं।) आप फरमाते हैं कि "इस समय ख़ुदा तआला सब गुनाह की तरफ बुलाने वाले उठा देता है।" (अर्थात इंसान को गुनाह का प्रोत्साहन देने वाली जो भी बातें हैं अगर तक्वा पूर्ण हो तो गुनाह का प्रोत्साहन देने वाली यह सब बातें सब बातों को अल्लाह तआला नष्ट कर देता है।) फरमाते हैं कि" पत्नी की ज़रूरत हो तो पत्नी देता है दवा की ज़रूरत हो तो दवा देता है जिस वस्तु की ज़रूरत हो वह देता है और ऐसे स्थान से रिज़्क देता है कि उसे खबर नहीं होती।

आप फरमाते हैं "एक और आयत कुरआन शरीफ में है اِنَّ الَّذِيۡنَ قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوۡا وَ لَا تَحۡزَنُوۡا (सूरह हाम्मीम सिज्दा 31)फरमाते हैं कि "इससे भी अभिप्राय मुत्तकी हैं" (अर्थात वे लोग जिन्होंने कहा कि "अल्लाह हमारा रब्ब है और फिर स्थिरता से इस पर विश्वास पर स्थापित हो गए कि अल्लाह तआला हमारा रब्ब वही हमारी जरूरतों को पूरा करने वाला है। वही पालो वाला है उन पर फरिश्तें उतरेंगे यह कहते हुए कि डरो नहीं और तुम्हारे जो कुछ पिछले कर्म हैं, काम हैं उन पर भी भय न खाओ क्योंकि अब तुम ने तक्वा धारण कर लिया।) आप फरमाते हैं कि "इस अभिप्राय मुत्तकी है।" ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا अर्थात उन पर भूकंप आए, परीक्षाएं आईं, आंधियां चलीं मगर एक प्रतिज्ञा जो कर चुके हैं इससे न फिरे।" (ख़ुदा तआला से दृढ़ता की प्रतिज्ञा कर ली। यह नहीं कि साल के साल रमज़ान आएगा तो उस पर पालन होगा और तक्वा होगा और एक महीने में जन्नत के दरवाज़े खुल जाएंगे। दृढ़ता शर्त है।) आप फरमाते हैं " फिर आगे ख़ुदा तआला फरमाता है कि जब उन्होंने ऐसा किया और ईमानदारी और निष्ठा दिखाई तो इसका इनाम यह पाया कि تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ अर्थात उन पर फरिश्ते उतरे और कहा कि भय और दुख मत कर।" (शोक मत करो।) तुम्हारा ख़ुदा मुतवल्ली है।وَ اَبۡشِرُوۡا بِالۡجَنَّةِ الَّتِيۡ كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ (सूरह हाम्मीम सिज्दा 31) "और बिशारत दी कि तुम खुश हो इस जन्नत से" फरमाते हैं कि "जन्नत से यहाँ मतलब दुनिया की जन्नत है अगले जहान कीजन्नत नहीं है बल्कि अल्लाह तआला तक्वा पर चलने वालों को इस जन्नत की बिशारत दे रहा है जैसे कुरआन में है وَ لِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ(सूरह रहमान 47)फिर फरमाते हैं "फिर आगे है نَحۡنُ اَوۡلِيٰٓؤُكُمۡ فِي الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَ فِي الۡاٰخِرَةِ(सूरह हाम्मीम सिज्दा 32) दुनिया और परलोक में हम तुम्हारे वली और मुतकफ्फिल हैं।

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 251-253.प्रकाशन 1984 ई य.के)

अत: अल्लाह तआला नेकियों पर स्थापित होने वालों के गुनाहों को माफ करता है और फिर यही नहीं बल्कि उन्हें दुनिया की नेअमतें भी प्रदान करता है और भविष्य में भी वली और मुतकफ्फिल होता है। कितने भाग्यशाली हैं हम में से वे जो रमज़ान में अपनी अवस्थाओं को बदलते हुए दृढ़ता से अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार अपना जीवन बिताने वाले हैं और इस कोशिश में हैं कि इस तरह अपना जीवन गुजारें।

तक्वा और दृढ़ता धारण करने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अधिक फरमाते हैं कि

"पहले जो सच्चा मुसलमान होता है उसे धैर्य करना पड़ता है।" (शुरु शुरु में तो सब्र करना पड़ता है।) "सहाबा पर भी ऐसे समय आए हैं कि पते खाकर गुज़ारा किया। किसी समय रोटी का टुकड़ा भी उपलब्ध नहीं होता था। कोई व्यक्ति किसी के साथ भलाई नहीं कर सकता जब तक ख़ुदा तआला भलाई न करे। जब इंसान तक्वा धारण करता है तो ख़ुदा तआला उसके लिए दरवाज़ा खोल देता है। وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۳﴾ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ (अत्तलाक 3-4) ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान लाओ।" (आप फ़रमाते हैं सच्चा ईमान लाओ। इस आयत के दो भाग हैं आयत का अनुवाद है कि जो अल्लाह का तक्वा धारण करेगा अल्लाह तआला उसके लिए कोई रास्ता निकाल देगा और उसे वहाँ से रिज़्क देगा وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ। ऐसी जगह से रिज़्क देगा जहां उसे वह अपनी जीविका का विचार भी नहीं आता।) आप फरमाते हैं "ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान लाओ इससे सब कुछ मिल जाएगा। दृढ़ता चाहिए। नबियों को जितने स्तर मिले हैं दृढ़ता से मिले हैं।" फरमाया कि "खाली शुष्क नमाज़ों और रोज़ों से क्या हो सकता है"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 204 प्रकाशन 1984 ई यू.के)

रमज़ान में केवल रोज़ा और नमाज़ें और पढ़ लें इससे कुछ नहीं होगा। स्थिरता होगी तो सब कुछ मिलेगा।

अत: अल्लाह तआला हमें मुत्तकी बनाना चाहता है ताकि उसके बेहिसाब फज़्लों के दरवाज़े हम पर खुलें और रमज़ान में वह विशेष रूप से अपने फज़्लों के दरवाज़े तक्वा करने वालों के लिए खोलता है।

मुत्तकी बनने के लिए न केवल बुराइयों को छोड़ना है बल्कि नेकियाँ भी धारण करनी हैं। इस का विवरण बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फरमाते हैं

"मुत्तकी बनने के लिए यह आवश्यक है कि इस के बाद मोटी बातों जैसे व्यभिचार, चोरी, अधिकारों को मारना, दिखावा, अहंकार, कंजूसी को छोड़ने में पक्का हो। बुरी नैतिकता से परहेज़ कर के इन के मुकाबले उत्तम चरित्र का विकास करे। (जितने घटिया आचार हैं उनसे बचे और जो अच्छे आचरण हैं उनमें तरक्की करे। यह आवश्यक शर्त है।) फरमाया कि "लोगों से नेकी, ख़ुशी, स्वाभाविक सहानुभूति से व्यवहार करे, ख़ुदा तआला के साथ सच्चा बैअत और ईमानदारी दिखलाए। सेवाओं के प्रशंसनीय स्थान तलाश करे।"(ऐसी नेकियाँ और ऐसी सेवाऐं करे जो सराहनीय हों, असामान्य हों। तक्वा की गुणवत्ता तभी मिलती हैं कि निस्स्वार्थ होकर दूसरों से नेकियाँ की जाएं। अल्लाह के अधिकार भी, बन्दों के अधिकार भी ऐसे उच्च स्थान पर ऐसे उन्नत हों जो सराहनीय हों।) फरमाया कि "इन बातों से मनुष्य मुत्तकी कहलाता है और जो लोग इन बातों के व्यापक होते हैं" (जिनमें यह सब बातें जमा हो जाती हैं) "वही वास्तविक मुत्तकी होते हैं" (अर्थात अगर एक नैतिकता अकेले अकेले किसी में हों तो उसे मुत्तकी न कहेंगे जब तक कुल मिलाकर उत्तम चरित्र इस में न हों और ऐसे ही पुरूषों के लिए لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ और उसके बाद उन्हें क्या चाहिए। अल्लाह तआला ऐसों का मुतवल्ली हो जाता है जैसे कि कहता है وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ(अल्आराफ 197)" फरमाया कि " हदीस में आया है कि अल्लाह तआला उनके हाथ हो जाता है जिससे वे पकड़ते हैं उनकी आंख हो जाता है जिससे वे देखते हैं उनके कान हो जाता है जिससे वे सुनते हैं उनके पैर हो जाता है जिससे वे चलते हैं और एक और हदीस में है कि जो मेरे वली से वैर करता है मैं इससे कहता हूँ कि मेरे मुकाबला के लिए तैयार रहो।" एक जगह फरमाया कि जब कोई ख़ुदा तआला के वली पर हमला करता है तो ख़ुदा तआला उस पर ऐसे झपट कर आता है जैसे एक शेरनी से कोई उसका बच्चा छीन ले तो वह क्रोध से झपटती है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 400-401 प्रकाशन 1984 ई यू.के)

फिर तक्वा के महत्व और अपनी मामूरियत के उद्देश्य को परिभाषित करते हुए आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने "हमें जिस बात पर तैनात किया है वह यही है कि तक्वा का मैदान खाली पड़ा है तक्वा होना चाहिए न कि तलवार उठाओ। यह हराम है। अगर तुम तक्वा करने वाले होगे तो सारी दुनिया तुम्हारे साथ होगी। अत: तक्वा पैदा करो। जो लोग शराब पीते हैं या जिनके धर्म के अंगों में शराब प्रधान घटक है उन्हें तक्वा से कोई संबंध नहीं हो सकता जो लोग धर्म से युद्ध कर रहे हैं। तो अगर अल्लाह तआला ने हमारी जमाअत को ऐसा भाग्य दे और उन्हें ताकत दे कि वह बुराई से युद्ध करने वाले हों और तक्वा और पवित्रता के क्षेत्र में तरक्की करें यही बड़ी सफलता है और इससे बढ़कर कोई बात प्रभावी नहीं हो सकती।" फरमाया इस समय सारी दुनिया के धर्मों को देख लो कि मूल उद्देश्य तक्वा ख़त्म है और दुनिया के ऐश्वर्यों को ख़ुदा बनाया गया है। सच्चा ख़ुदा छुप गया है और सच्चे ख़ुदा की उपेक्षा की जाती है लेकिन अब ख़ुदा तआला चाहता है कि वह आप ही माना जाए और दुनिया को इसकी अनुभूति हो। जो लोग दुनिया को ख़ुदा तआला समझते हैं वह मुतवक्किल नहीं हो सकते।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 357-358 प्रकाशन 1984 ई यू.के)

फिर आप हमें नसीहत करते हुए कहते हैं कि "जो लोग केवल निष्ठा यह चाहते हैं कि ख़ुदा तआला की पकड़ से बच जाएं वे गलती करते हैं उन्हें स्वयं ने धोखा दिया है।" फरमाया "देखो वैद्य जिस वज़न तक मरीज़ को दवा पिलाना चाहता है अगर वह इस हद तक न पीए तो ठीक होने की उम्मीद रखनी व्यर्थ है।...... तब उस सीमा तक सफाई करो और तक्वा धारण करो जो ख़ुदा तआला के प्रकोप से बचाने वाला होता है।" कहा "अल्लाह तआला लौटने करने वालों पर दया करता है क्योंकि अगर ऐसा न होता तो दुनिया में अंधेर पड़ जाता।" फरमाया कि "इंसान जब मुत्तकी होता है तो अल्लाह तआला उसके और उसके गैर में फ़ुर्कान (अन्तर करने वाला) रख देता है।"

आप फरमाते हैं कि हमारी जमाअत को डरना चाहिए। अगर किसी में तक्वा हो जैसा कि ख़ुदा तआला चाहता है तो वह बचाया जाएगा।" फरमाया कि "इस सिलसिले को ख़ुदा तआला ने तक्वा ही के लिए ही स्थापित किया है क्योंकि तक्वा का मैदान बिल्कुल ख़ाली है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 361से 363 प्रकाशन 1984 ई यू.के)

अत: एक और रमज़ान का हमारे जीवन में आना और अल्लाह तआला का यह फरमाना कि रमज़ान इसलिए आता है कि तुम तक्वा धारण करो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह फरमाना कि इस सिलसिले को अल्लाह तआला ने तक्वा के लिए ही स्थापित किया है हम पर बड़ी जिम्मेदारी डालता है कि हम हर समय अपनी अवस्थाओं की समीक्षा करते रहें और अल्लाह तआला जो यह विशेष फज़्ल के दिन रखे हुए हैं उनमें अपने अंदर ऐसा परिवर्तन पैदा करें और अपने तक्वा के मानकों को ऐसा बढ़ाने की कोशिश करें जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है। और फिर रमज़ान तक ही सीमित न रहें बल्कि अपने जीवन का हिस्सा बना लें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक प्रदान करे।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय ख्वाजा अहमद हुसैन साहब दरवेश कादियान का है जो आदरणीय मोहम्मद हुसैन साहिब के बेटे थे। 31 मई 2017 ई को 92 साल की उम्र में उनकी वफात हो गई। इन्ना

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 6 July 2017 Issue No. 27

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। 1926 में कादियान के निकट गांव सैखवां में पैदा हुए। उनके नाना हज़रत मियां इमाम दीन साहिब और उनके दो भाई मियां जमाल दीन और मियां ख़ैर दीन साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथी थे। ख्वाजा अहमद हुसैन साहब का बचपन बेहद गरीबी में बीता। 9 साल की उम्र में अपने परिवार के साथ कादियान आकर बसे। और परिस्थितियों की वजह से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके लेकिन बचपन में पढ़ाई का शौक था। निजी प्रयास से कुरआन शरीफ पढ़ना पहले सीख लिया फिर कादियान में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के मजालिस इरफान में शामिल होते थे और वहीं से अपने ज्ञान को उन्होंने बहुत बढ़ाया। देश विभाजन के वक़्त हज़रत मुस्लेह मौऊद की तहरीक पर में अपने माता-पिता से सलाह करके कादियान में रहने पर सहमत हो गए और दरवेशी धारण की। एक ऐसा समय भी आया जहां जमाअत पर कि दरवेशों का गुज़ारा भत्ता के लिए अंजुमन के पास पैसे नहीं थी संसाधन सीमित थे तो तब कुछ कुशल दरवेशों को कहा गया कि बाहर जाकर रोज़गार तलाश करो । आप दर्ज़ी का काम जानते थे इसलिए 1953 से 1962 ई तक दक्षिण भारत में रहने के दौरान यह अपना रोज़गार खुद करते रहे फिर वापस कादियान आ गए और फिर सदर अंजुमन अहमदिया के विभिन्न कार्यालयों में उन्हें सेवा की तौफ़ीक़ मिलती रही। 1989 ई में आप रिटायर हो गए और जमाअत की सेवाओं के साथ कादियान में मस्जिद मुबारक के गेट के सामने अपनी उन्होंने अपनी एक दुकान भी सिलाई की खोल ली। नमाज़ों के पाबन्द तहज्जुद गुज़ार बहुत शांत और अच्छ चरित्र के इंसान थे।

उन्हें 2005 में यहां जलसा यू.के में भी शिरकत की तौफ़ीक़ मिली। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी से लेकर के ख़िलाफत ख़ामस: तक चार ख़लिफतों को देखने की तौफ़ीक़ मिली। हमेशा अपना काम ख़ुद करने के आदी थे। औलाद को हमेशा ख़िलाफत से प्रतिबद्धता की हिदायत करते थे। उनकी पहली शादी उनके रिश्तेदारों में हुई थी और क्योंकि जमाअत का आदेश था कि महिलाओं को पाकिस्तान भिजवा दिया जाए तो उनकी 1946 ई में यह पहली शादी हुई थी। उन्होंने अपनी पत्नी पाकिस्तान भिजवा दिया फिर उनके क्योंकि माँ ग़ैर अहमदी थीं और उनका सही सहयोग नहीं था फिर वहाँ से उनका संबंध समाप्त हो गया। 1953 में उन्होंने हैदराबाद डेक्कन से एक महिला हमीदा बेगम से दूसरी शादी की। उनसे उनकी चार बेटियां और एक बेटा है। आप के बेटे ख्वाजा बशीर अहमद साहब हेडमास्टर हैं तालीमुल इस्लाम स्कूल कादियान के और उनकी एक बेटी सलीमा कमर साहिबा नसीर अहमद क़मर साहब एडीशनल वकील इशाअत लंदन की पत्नी हैं। इसी तरह एक और दामाद भी अपने हफीज़ भट्टी साहिब कादियान में सिलसिला की सेवा कर रहे हैं।

उसकी बेटी,नसीर क़मर साहिब की पत्नी लिखती हैं कि बेशुमार गुणों के मालिक थे। दुआ करने वाले, सरल स्वभाव, मेहनती ,हंसमुख, खिलाफत के शैदाई बहुत शरीफ़ इंसान थे और कहती हैं जब शादी हो के रबवह गई हूँ तो मुझे कहा कि मैं ज़रा उदास थी। मुझे कहा कि उदास होने की जरूरत नहीं तुम तो भाग्यशाली हो कि हर जुम्अ: को समय के ख़लीफा का ख़ुत्बा सीधा सुना करोगी। प्रत्येक समय मस्जिद की तरफ उनकी ध्यान रहता था कि प्रत्येक नमाज़ में मस्जिद जाया करूं। कुछ साल पहले स्ट्रोक हुआ जिसकी वजह से मस्जिद नहीं जा सकते थे तो हमेशा यह दुआ करते थे और लोगों को कहते थे यह दुआ करो कि अल्लाह तआला मेरी टांगों में इतनी जान डाल दे कि मस्जिद जा सकूँ। और असंख्य नेकियों के मालिक थे। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करे। बावजूद गरीबी, तंगी, विपरीत परिस्थितियों के उन्होंने अपनी बेटियों को भी पढ़ाया और बी.ए तक शिक्षा दिलवाई और उन के बेटे ने भी बी.एस. सी, बी एड और एम.ऐ किया जैसा कि मैंने बताया तालीमुल इस्लाम स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं। अल्लाह तआला उनकी औलाद को और वंश दर वंश को खिलाफत से वफ़ा का संबंध रखने की तौफ़ीक़ दे और जो उन्होंने कुरबानी की हैं वह आगे भी उनकी औलाद को भी और पीढ़ियों को भी इसे याद रखने और जमाअत से वफा का संबंध रखने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

कम। मेरे स्वभाव में अल्लाह तआला ने बचपन से ही सोचने और विचार करने की आदत रखी है। मैं उस समय से कि मैंने होश संभाला है इस बात को सोचता रहा हों और अब भी उसकी चिंता है कि हमारी जमाअत में ज़िक्रुल्लाह की जो कमी है उसे दूर किया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ पर बहुत बड़ा ज़ोर दिया है। और अल्लाह तआला का शुक्र है कि हमारी जमाअत दुआ से बहुत काम लेती है इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद ने ज़िक्रे इलाही पर भी बहुत जोर दिया लेकिन उसकी ओर जैसे कि ध्यान देना चाहिए तब तक ऐसी नहीं किया गया। एक बहुत बड़ा कारण तो यह है कि अंग्रेज़ी शिक्षा ने कुछ विचार बदल दिए हैं और यूरोपीय शिक्षा के प्रभाव से लोग मानते हैं कि यूं ही ख़ुदा का नाम लेने से क्या लाभ हो सकता है। अगर कोई अलग बैठे कहता रहे कि ला इलाहा इल्लल्लाह या ख़ुदा पवित्र है, अलीम है। ख़बीर है, कदीर है, ख़ालिक है, तो इससे क्या फायदा हो सकता है। कुछ नहीं इसलिए इस तरह करने की ज़रूरत नहीं। हमारी जमाअत के लोग भी चूंकि अंग्रेज़ी शिक्षा से शुग़ल रखते हैं इसलिए वह भी इस आशय के नीचे आ गए दूसरी हमारी जमाअत में वे लोग हैं जो जमींदार वर्ग से संबंध रखते हैं। ये लोग पहले ही न जानते थे कि ज़िक्रे इलाही क्या है और इसका क्या लाभ है इसलिए जब तक इन सभी को अच्छी तरह न बतलाया जाए ।और अच्छे तरीके से नहीं समझा दिया जाए तब तक उस तरफ ध्यान नहीं कर सकते। यही कारण है कि इन में ज़िक्ररुल्लाह कम है। नमाज़ भी ज़िक्ररुल्लाह है जिस की हमारी जमाअत में ख़ुदा की कृपा से पूरी पूरी पाबन्दी की जाती है मगर इसके सिवा और भी ज़िक्ररुल्लाह हैं जिनका होना आवश्यक और अनिवार्य है। उनके बारे में यह तो नहीं कह सकता कि वह हमारी जमाअत में हैं ही नहीं लेकिन यह ज़रूर कहूंगा कि कम हैं। कुछ अधिक लोग उन पर अमल नहीं करते और यह भी बहुत बड़ी त्रुटि है। देखो अगर किसी की शक्ल सुंदर हो लेकिन उसकी आंख या कान या नाक ख़राब हो तो क्या उसे सुंदर कहा जाएगा। हरगिज़ नहीं। बल्कि इसे सब लोग ही बुरी शक्ल का कहेंगे। इस तरह अगर हमारी जमाअत के कुछ लोग ज़िक्ररुल्लाह के कुछ तरीके को अमल में नहीं लाते तो उनका ऐसा ही उदाहरण है जैसा कि एक व्यक्ति ने बड़ा कीमती वस्त्र, कोट, कमीज़, सदरी और पाजामा पहना हो लेकिन पांव में जूता न रखता हो या सिर पर पगड़ी न हो। यद्यपि इसके सारा वस्त्र अच्छा होगा लेकिन एक पगड़ी या जूते के न होने से इस में कमी होगी। और उत्तम स्तर के लोग पसंद नहीं करते कि उनकी किसी बात में कमी हो। अत: जब सभी तरीकों से ज़िक्ररुल्लाह न करना एक त्रुटि है

(शेष..........)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

जमाअत की सेवा के इच्छुक ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के कुछ निकायों में कार्यकर्ता दर चतुर्थ आसामी भरी जा है। जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में चतुर्थ श्रेणी सेवा के इच्छा हों वे निम्नलिखित शर्तों के अनुसार आवेदन कर सकते हैं।

(1) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है। (2) उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए। बर्थ सर्टिफिकेट प्रस्तुत करना आवश्यक होगा। (3) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो इन्ट्रवियू बोर्ड तकरुर कारकुनान में सफल होंगे। (4) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो नूर अस्पताल कादियान मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और ठीक होंगे। (5) उम्मीदवार के कादियान आवाजाही का सफर खर्च अपने होंगे। (6) अगर किसी उम्मीदवार का चयन होता है तो इस अवस्था में उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। (प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया से लिए जा सकता है। इस घोषणा के 2 महीने के अंदर जो आवेदन आएंगे उन पर विचार होगा) (नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:
कार्यालय: 01872-501130 मोबाइल: 09815433760
e.mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad